मानवता का संदेश

सार्वजनिक सभाओं में पांच व्याख्यान,
जिनमें
जीवन की समस्याओं पर नए ढंग से विचार करने
तथा नवीन रूप से प्रयास करने का
आवाहन दिया गया है।

सैय्यद अबुल हसन अली नदवी

अनुवादक
अतहर हुसैन
एम.एल.सी, बी.एड., कामिल, विशारद

मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम
पोस्ट बाक्स नं0 119, नदवतुल उलमा, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

प्रकाशक
मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम
पोस्ट बाक्स नं0 119, नदवतुल उलमा, लखनऊ

सीरीज़ नं0 : 6

दूसरा संस्करण (हिन्दी) – 1973
तीसरा संस्करण (हिन्दी) – 1996
चौथा संस्करण (हिन्दी) – 2013

मूल्य : 50 रूपये

मुद्रक :
काकोरी आफ्सेट प्रेस, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

विषय सूची

1. प्राक्कथन 4

2. ख़राबी की जड़ यह है कि बुराई तथा पाप की इच्छा उत्पन्न हो गई है। 6

3. आज संसार पर स्वार्थता एवं दुराचार का मानसून आच्छादित है उसे चादरों से रोका नहीं जा सकता। 24

4. मनुष्य स्वार्थ भक्त भी है और आत्म विस्मृत भी। 42

5. संसार का वर्तमान असमंजस्य यह नहीं कि बुराई दूर हो, बल्कि यह कि बुराई हमारे निर्देश एवं व्यवस्था में हो। 56

6. उच्च कोटि के नैतिक मूल्य हृदय में विलीन हैं....उनकी खोज बाहर है। 67

www.abulhasanalinadwi.org

प्राक्कथन

इस संग्रह में हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी के वह पांच व्याख्यान सम्मिलित हैं जो उन्होंने जनवरी 1954 में पाचं नगरों के पांच जन समूहों में दिये, जिसमें हिन्दू, मुस्लिम सज्जनों के अतिरिक्त अन्य वर्गों तथा विभिन्न सम्प्रदायों से सम्बन्ध रखने वाले लोगों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया था।

जो बातें इन व्याख्यानों में कही गई हैं वह अधिकांशतः पसन्द की गईं, सभी लोगों ने अपनी सहमति प्रकट की और नगर में काफी समय तक इस विषय की सराहना की गई और विचार विमर्श होता रहा। वह सरल, सुबोध एवं दैनिक जीवन से सम्बन्धित तथ्य थे फिर भी इस प्रकार सुने गए मानो नवीनतम बातें हैं जिनका प्रस्तुतीकरण नये ढंग से किया जा रहा है।

मौलाना नदवी फ़रमाते हैं :–

"मानव जाति की महत्तवपूर्ण विशेषता यह है कि स्वार्थ, कलह एवं पक्षपात तथा राजनीतिक उद्देश्यों से सर्वथा निवृत एवं असम्बद्व हो कर जन साधारण के समक्ष वह तथ्य प्रस्तुत करे जिन पर मानवता का सुख एवं शान्ति आधारित है और जिनकी उपेक्षा करके हमारे समस्त संस्कृति एवं प्राणी मात्र इस समय भयंकर आशंकाओं से दो चार तथा जीवन मरण की द्विधा में ग्रस्त है। इन तथ्यों को पैगम्बरों ने समयानुसार प्रस्तुत किया था और इनके लिये कठोर प्रयास भी किये। परन्तु यह तथ्य अब भी जीवित हैं : राजनीतिक आन्दोलनों, भौतिकवादी संस्थाओं ने राष्ट्रीय स्वार्थ के रज रेणु का ऐसा तूफान खड़ा कर दिया है कि यह प्रज्वलित तथ्य उनकी ओट में ओझल हो गये हैं, परन्तु मानवी अंतरात्मा अभी

www.abulhasanalinadwi.org

निर्जीव तथा मानुषिक बुद्धि अभी लुंज एवं अनुलम्बित नहीं हुई है। यदि पूर्ण निःस्वार्थता एवं आस्था और पूर्ण विश्वास के साथ इन तथ्यों को सरल एवं सुगम भाषा तथा हृदयंगम शैली में बयान किया जाये तो यह मानवी अंतरात्मा एवं बुद्धि गतिशील हो जाती है और उल्लास एवं उत्साहपूर्वक इन तथ्यों का स्वागत करती है और कभी तो ऐसा आभास होता है कि इन व्याख्यानों में उनके हृदय की बात तथा उसकी पीड़ा की सांत्वना निहित है।"

इन सभाओं से अनुभव हुआ कि निःस्वार्थ आवाहन तथा ईश्वर भक्ति एवं मानव मित्रता का आन्दोलन अब भी प्रभाव युक्त है और लोगों में सच्ची बात ग्रहण करने की क्षमता एवं योग्यता विद्यमान है। और धर्म में अब भी धारण करने की वही शक्ति है जो किसी आन्दोलन एवं संगठन में नहीं है। इसमें यह भी अनुमान लगा कि लोग भौतिकवाद तथा अपनी वर्तमान अवस्था से असन्तुष्ट हैं और अगर सहानुभूति एवं निःस्वार्थता के साथ इस पर आलोचना की जाये तो लोग उसको सुनने के लिये तैयार हैं तथा उनका हृदय इसका समर्थन करता है। व्याख्यानों का यह संग्रह 1974 ई0 में मजलिस की ओर से प्रकाशित किया गया जब कि इससे पूर्व कई संस्करण प्रकाशित हो चुके थे और लोगों ने हाथों हाथ लिया।

अब इस संग्रह का हिन्दी संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि हिन्दी भाषी वर्ग में यह व्याख्यान ध्यान एवं रूचि पूर्वक पढ़े जायेंगे और यह छोटी सी पुस्तिका वर्तमान आध्यात्मिक असंतोष को दूर करने में सहायक सिद्ध होगी।

मुहम्मद राबे नदवी
सेक्रेट्री
मजलिस तहक़ीक़ात व नशरियते इस्लाम
लखनऊ

01.03.1978

www.abulhasanalinadwi.org

ख़राबी की जड़ यह है कि बुराई तथा पाप की इच्छा उत्पन्न हो गई है

प्रस्तुत व्याख्यान

9 जनवरी 1954 को गंगा प्रसाद मेमोरियल हाल, लखनऊ में एक संयुक्त समारोह में दिया गया, जिसमें नगर के प्रतिष्ठित लोग तथा ग़ैर मुस्लिम शिक्षित सज्जन बड़ी संख्या में सम्मिलित थे।

इतिहास का अध्ययन

मित्रो तथा भाईयो ! आपमें से अधिकांश ने इतिहास का अध्ययन किया होगा। मनुष्य आज नया नहीं है, वह सहस्त्रों वर्ष से इस पृथ्वी पर जीवन यापन कर रहा है, उसका शताब्दियों का इतिहास सुरक्षित है, इस इतिहास का धरातल जल के समान समतल नहीं, इसमें अनेक उतार चढ़ाव हैं, इसमें आदमी कहीं ऊंचा दिखायी पड़ता है कहीं नीचा। कभी ऐसा आभास होता है कि यह मनुष्यों का इतिहास नहीं अपितु रक्त पात करने वाले तथा हिंसक पशुओं का इतिहास है, सबका इतिहास हो सकता है कि मनुष्यों का इतिहास कदाचित् नहीं। इसके अध्ययन से मनुष्य की गर्दन लज्जा से झुक जाती है, कि हम में ऐसे भी व्यक्ति हो चुके हैं। इस बात का निर्णय तो भविष्य में आने वाली पीढ़ियां करेंगी कि हम और आप कैसे आदमी थे। परन्तु इसका अनुमान हम लगा सकते हैं कि मनुष्यों का पिछला रिकार्ड कैसा है। इसमें अनेक ऐसे युग दिखाई देते हैं कि यदि बस चले तो हम इतिहास के इन

www.abulhasanalinadwi.org

पृष्ठों को निकाल कर फेंक दें, यह ऐसा रिकार्ड है कि हम बच्चों के हाथ में देने को तैयार नहीं। मुझे उसकी गाथा का वर्णन नहीं करना है, परन्तु उस तथ्य की ओर ध्यान आकृष्ट करना है कि इतिहास में जो ऐसे घृणात्मक एवं दुखदायी युग बीते हैं उनमें खराबी की जड़ क्या थी।

जब तक सुसाईटी में बुराई की प्रवृत्ति तथा बिगाड़ की क्षमता न हो कोई उसको बिगाड़ नहीं सकता

सज्जनों ! साधारणतया लोग किसी विशिष्ट वर्ग अथवा कुछ व्यक्तियों और कभी एक मात्र किसी व्यक्ति को समाज के बिगाड़ का कारण ठहराते हैं और समझते हैं कि इन विकृत तत्वों ने या किसी व्यक्ति विशेष ने सम्पूर्ण समाज के जीवन को पथ भ्रष्ट कर दिया था, परन्तु मैं इस बात से सहमत नहीं। मैं इतिहास के अध्ययन के आधार पर कहता हूं कि एक मछली तालाब को गन्दा कर सकती है किन्तु अकेला व्यक्ति सम्पूर्ण समाज के बिगाड़ का कारण नहीं बन सकता। सत्य यह है कि पवित्र तथा परिमार्जित समाज में बुरे व्यक्ति का गुज़ारा ही नहीं हो सकता, वह घुट–घुट कर मर जायेगा। जिस प्रकार मछली को पानी से निकाल दिया जाता है तो वह घुट कर मर जाती है, उसी प्रकार जो समाज बुराई को प्रोत्साहित नहीं करता और उसका स्वागत करने के लिये तैयार नहीं, उसमें बुराई तड़पने लगेगी, उसका दम घुटने लगेगा और वह दम तोड़ देगी।

हर युग में अच्छे बुरे इन्सान हुए हैं लेकिन समस्त बुराइयों का उनको उत्तरदायी ठहराना और सारी बुराईयों को उनके सिर मढ़ना उचित नहीं। यदि लोग प्रभुत्तशाली हो गये थे तो इसका तात्पर्य यह नहीं कि सम्पूर्ण जीवन का हैन्डिल उनके हाथ में था और वह जिस ओर चाहते थे जीवन को मोड देते थे बल्कि बात

www.abulhasanalinadwi.org

यह थी कि उस समय समाज स्वयं दूषित हो गया था, उसकी अन्तरात्मा में ही बिगाड़ उत्पन्न हो गया था उसमें बुराईयों की प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई थी, उसके अन्दर अन्धेर, अत्याचार एवं कामनाओं आकांक्षाओं को पूरा करने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हो गई थी वह सर्व स्वार्थी था और इच्छा भक्त बन गया था। जिस हृदय में घुन लग जाये और मन पापी हो जाये, आप उसे अपराध करने से किसी प्रकार नहीं रोक सकते, आप उसको बेड़ियों में जकड़ कर भी रखेंगे तब भी इन बातों से सुरक्षित नहीं रख सकते।

स्वार्थी मनुष्य

हर समय कुछ ऐसे व्यक्ति रहे हैं, जिनका विश्वास था कि बस हम और हमारे परिवार के लोग मनुष्य हैं और शेष समस्त हमारे दास एवं सेवक हैं। कुछ ऐसे मनुष्य भी हैं जो करोड़ों इन्सानों को बसता देखते हैं परन्तु स्वयं अपने सीमित क्षेत्र को मनुष्य कहलाने का अधिकारी समझते हैं। यह लोग बस यह समझते हैं कि संसार में उन्हीं के परिवार के दस, ग्यारह या बीस, पच्चीस मनुष्य रहते हैं। ऐसे इन्सान सदैव रहे हैं जो अपनी तथा सगे सम्बन्धियों की समस्याओं को देखने के लिये सूक्ष्मदर्शक का प्रयोग करते हैं और दूसरों को देखने के लिये उनकी आंखें भी बन्द हो जाती हैं, उन्हें दिखाई भी नहीं देता कि दूसरे इन्सान कहां हैं। मेरा अनुमान है कि उनके पास वह चश्मा है कि उनके द्वारा उनको अपने बच्चे आकाश से बाते करते दिखाई देते हैं, उनको अपने राई बराबर गुण पहाड़ तथा दूसरों के पहाड़ गुण राई बराबर दिखाई देते हैं।

सुधार के विभिन्न सुझाव तथा अनुभव

संसार के विभिन्न लोगों ने अपनी अपनी समझ के अनुसार जीवन के सुधार हेतु विभिन्न विधियां सोचीं और उन पर यत्न करना आरम्भ कर दिया।

www.abulhasanalinadwi.org

किसी ने कहा कि सारी खराबी की जड़ यह है कि मनुष्य को पेट भर भोजन प्राप्त नहीं, यही जीवन का सब से बड़ा रोग है अतः उन्होंने इसी समस्या को अपना मिशन बना लिया, इसके फलस्वरूप पाप में वृद्धि हुई। पहले लोग दुर्बल थे पाप भी उसी के अनुसार क्षीण था। उन्होंने जब रक्त के इन्जेक्शन दिये और जीवन शक्ति (Vitality) बढ़ाई तो उनके पाप भी शक्तिशाली बन गए। मन बदला नहीं, अन्तरात्मा बदली नहीं, मनोवृत्ति में परिवर्तन हुआ नही, शक्ति में वृद्धि हो गई, निश्चिन्ता बढ़ गई। अन्तर केवल यह हुआ कि पहले फटे वस्त्रों में पाप होते थे, अब मूल्यवान तथा चमकीले वस्त्रों में पाप होने लगे। पहले निर्बल तथा अकुशल हाथों से पाप होते थे, अब बलवान तथा कुशल हाथों से वही सब पाप होने लगे।

किसी ने कहा शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध किया जाये क्यों कि जो अज्ञानता एवं निक्षरता है वही विकार एवं अशान्ति की जड़ है और समस्त खराबियों का मूल कारण है। ज्ञान में वृद्धि हुई, लोगों ने जानकारी प्राप्त की और नई नई भाषायें सीखीं, परन्तु जिसकी अन्तरात्मा विकृत तथा मनोवृत्ति में टेढ़ापन था और मन में पाप रचा बसा था, उन्होंने ज्ञान को विकृत एवं विनाश का साधन बना लिया। स्पष्ट तथ्य है कि यदि चोर को लोहारी आ जाये तो वह तिजोरी तोड़ना सीखेगा। अब अगर किसी के ह्रदय में ईश्वर का भय तथा मानवी सहानुभूति की प्रवृत्ति नहीं है और जुल्म एवं अत्याचार उसके रोम रोम में समाया है तो ज्ञान उसके हाथ में विकृत एवं विनाश का हथियार दे देगा और उसको पाप के नित्य नए ढ़ंग सिखाएगा।

कुछ लोगों ने संगठन को सुधार का साधन समझा और अपनी पूरी शक्ति लोगों को संगठित करने में व्यय कर दी, परिणाम यह हुआ कि बिगड़े हुए लोगों की एक संस्था तैयार हो गई, जो काम अब तक अस्त व्यस्त रूप में हो जाता था अब

www.abulhasanalinadwi.org

सुव्यवस्थित रूप से होने लगा अब साज़िश गढ़ कर और अधिक व्यवस्थित रूप से सामूहिक चोरियां होने लगीं। लोगों ने नैतिक शिक्षा, मन एवं मस्तिष्क की ओर ध्यान नहीं दिया, जैसे भी बुरे भले लोग थे उनको संगठित करने ही को काम समझा, फलस्वरूप दुराचार एवं अनैतिकता को नई शक्ति मिल गई। मैं तो कहूंगा कि डाकुओं एवं चोरों तथा दुराचारियों का संगठन न होता तो अच्छा था।

किसी ने कहा कि भाषा की विभिन्नता उपद्रवों एवं अशान्ति का कारण है, भाषा एक तथा संयोजित होना चाहिये, इसी में देश का कल्याण, जाति की सम्पन्नता और मानवता की सेवा है। परन्तु यदि लोग न बदलें, विचार न बदलें, मन की इच्छाएं तथा अन्तः वृत्ति में परिवर्तन न हो तो भाषा के बदल जाने या बोली के एक हो जाने से क्या लाभ होगा। मान लीजिये कि यदि समस्त संसार के चोर एवं अपराधी एक बोली बोलने लगें और एक ही भाषा को अपना लें तो इससे संसार का क्या लाभ होगा और इससे अपराध में क्या बाधा पड़ेगी, मैं तो समझता हूं कि इसके अन्तर्गत चोरी एंव अपराध में कमी होने की जगह वृद्धि हो जायेगी और अपराधियों को पहचानना और कठिन हो जायेगा।

किसी ने कहा कि समय की सबसे बड़ी मांग तथा मानवता की सच्ची सेवा यह है कि संस्कृति एवं सभ्यता एक हो जाये, किन्तु आप को क्या मालूम नहीं कि यहां सभ्यताएं नहीं टकरातीं, लोलुपता टकराती है। "मेरे समान दूसरा नहीं" की घातक भावना टकराती है। हमारे अनेक नेता एवं देश के कर्णधारी बिना सोचे समझे कहने लगे कि यदि समस्त संसार की सभ्यता एक हो जाए तो मनुष्यता की न्या पार लग जायेगी, यदि सब की सभ्यता एक हो जाये तो इस देश के निवासी परस्पर घुल मिल जायेंगे। परन्तु, मित्रो ! सभ्यता एवं संस्कृति का एक होना लाभप्रद नहीं, दिल का एक होना लाभदायक है, किसी फ़ारसी कवि ने

www.abulhasanalinadwi.org

सच कहा है :–

"यक दिले अज़ यक ज़बाने बेहतर अस्त!" (एक भाषी होने से एक दिल होना अच्छा है) यदि लोग एक दिल न हुए तो एक भाषी अथवा एक ही सभ्यता के होने से कुछ लाभ नहीं। जो लोग पहले से ही एक भाषा बोलने वाले हैं और जिनकी एक ही सभ्यता एवं संस्कृति है उनमें कौन सा प्रेम एवं एकता पाई जाती है। क्या वह एक दूसरे पर अत्याचार नहीं करते, क्या वह एक दूसरे को धोखा नहीं देते, क्या वे एक दूसरे से पीड़ित एवं व्यथित नहीं हैं, क्या एक सभ्यता, एक भाषा एवं एक संस्कृति के लोग आपस में नहीं लड़ते?

कुछ ने कहा कि वस्त्र एवं पहनावा एक हो। परन्तु जब किसी प्रबल एवं अत्याचारी को दूसरे का गला दबोचने तथा गला पकड़ने की आदत पड़ जाये और जेब कतरने की आदत बन जाये तो क्या वह वस्त्र का आदर करेगा, क्या वह केवल इस कारण अपने संकल्प को त्याग देगा कि उसी का जैसा वस्त्र दूसरे के शरीर पर है। मनुष्यता का आदर एवं सम्मान हृदय में न हो तो वस्त्रों का आदर कैसे उत्पन्न होगा, वस्त्र का आदर एवं सम्मान तो मनुष्य के कारण है।

हृदय परिवर्तन के बिना जीवन में परिवर्तन सम्भव नहीं

मित्रो ! मनुष्यता की समस्याओं एवं जटिलताओं का समाधान न वस्त्र की समारूपता न भाषा एवं सभ्यता की एकता, न देश एवं जन्मभूमि का एकत्व, न धन एवं सम्पत्ति, न सभ्यता एवं संगठन, न साधन एवं सम्बन्ध का बाहुल्य। इन सब में कोई एक भी ऐसी शक्ति नहीं जो दुनिया को बदल दे, जब तक दिल की दुनिया नहीं बदलती बाहर की दुनिया नहीं बदल सकती। पूरी दुनिया की बागडोर दिल के हाथ हैं, जीवन का सारा बिगाड़ दिल

www.abulhasanalinadwi.org

के बिगाड़ से आरम्भ हुआ है। लोग कहते हैं कि मछली सिर की ओर से सड़ना आरम्भ होती है, मैं कहता हूं कि इन्सान दिल की ओर से सड़ता है, यहां से बिगाड़ आरम्भ होता है और समस्त जीवन को अपने घेरे में ले लेता है।

पैग़म्बर मनुष्य का स्वभाव बदलते हैं

पैग़म्बर यहीं से अपना कार्य आरम्भ करते हैं। वह भली भांति समझते हैं कि यह सब हृदय का दोष है, मनुष्य का हृदय बिगड़ गया है, उसके अन्दर चोरी, छल, कपट, अत्याचार एवं धोखा देने की भावना ने घर कर लिया है। उसके अन्दर कामना का दैत्य विद्यमान है जो नित्य उसे नचा रहा है और वह बच्चों के समान उसके संकेत पर गतिशील है, पैग़म्बर कहते हैं कि समस्त विकास का आधार यह है कि मनुष्य सर्वथा पापी हो गया है, उसके अन्दर बुराई की भावना तथा उसके प्रति घोर प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई है। अतः सबसे आवश्यक एवं उत्तम कार्य यह है कि उसके मन का सुधार किया जाये और उसे परिमार्जित किया जाये।

पैग़म्बर लोगों को फ़ाक़ा करते देखते हैं, इस दृश्य से उनका हृदय जितना दुःखी होता है, दुनिया में किसी का नहीं, उनका खाना पीना दूभर हो जाता है, किन्तु वह यथार्थ वादी होते हैं, वह यह नहीं करते कि इसी को समस्या का रूप देकर उसके समाधान हेतु जुट जायें, इस लिये कि वह जानते हैं कि यह विकार का परिणाम है, आधार नहीं। वह जानते हैं कि यदि लोगों को पेट भरने की सामग्री उपलब्ध कर दी जाये और अधिक अन्न लेकर भूखों को दे दिया जाये तो यह एक तत्कालीन एवं ऊपरी प्रबन्ध होगा। वह ऐसा वातावरण एवं परिस्थिति उत्पन्न करते हैं कि लोगों से दूसरों की भूख देखी न जा सके और स्वयं अपने घर से खाद्य पदार्थ ला कर लोगों के पास डाल जायें।

इसके प्रतिकूल लोग ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करते जाते हैं कि अन्न एक स्थान पर एकत्र होता चला जाये। स्मरण रहे कि

www.abulhasanalinadwi.org

अगर मनोवृत्ति में परिवर्तन नहीं हुआ और अन्न के वितरण या खाद्यवस्तु का प्रबन्ध कर दिया गया, तो उसके उपरान्त भी लोगों को ऐसी कला आती है कि दूसरों की झोली के दाने उनकी झोली में आ जायें और धन सम्पत्ति चारों ओर से सिमट कर उनके चरणों से लग जाये। आपने कदाचित "अल्फ़ लैला" की गाथा पढ़ी होगी, कि सिन्दबाद जहाज़ी अपनी एक यात्रा में एक स्थान पर पहुंचा। उसने देखा कि जहाज़ का कप्तान अति चिंतित एवं व्याकुल है। सिन्दबाद ने कारण पूछा, तो जहाज़ के कप्तान ने उत्तर दिया, कि हम गल्ती से ऐसे स्थान पर आ गए हैं जहां से निकट चुम्बक का एक पर्वत है। अभी कुछ ही समय में हमारा जहाज़ उसके समीप पहुंच जायेगा, चुम्बक लोहे को आकर्षित करता है, उस पहाड़ के आकर्षण द्वारा जहाज़ की सब कीलें और तख्तों के कब्ज़े निकल कर पहाड़ से जा मिलेंगे और जहाज़ का अंग अंग अस्त–व्यस्त हो जायेगा, उस समय हमारा जहाज़ डूबने से न बच सकेगा। और ऐसा ही हुआ। चुम्बक ने लोहे को आकर्षित करना आरम्भ किया और जहाज़ में जितना लोहा था सब खिंच कर पर्वत से जा मिला और देखते देखते जहाज़ डूब गया। सौभाग्यवश सिन्दबाद एक बहते हुए तख्ते के सहारे किसी टापू में पहुंच गया और उसकी जान बच गयी।

यह कथा सत्य हो अथवा असत्य इससे मुझे कोई सम्बन्ध नहीं, किन्तु मुझे आपको यह सुनाना था कि हमारे समाज में चुम्बकीय गुण रखने वाले पूंजीपति एवं व्यापारी विद्यमान हैं। जिन्हें आप भी चुम्बक (Magnet) कहते हैं। वह ऐसा षड़यंत्र रचते हैं कि धन सिमट कर उसके घर में आ जाता है, ऐसा आर्थिक जाल फैलाते कि लोग विवश हो कर सब कुछ उनकी झोली में डाल देते हैं और अपने जीवन के साधन एवं आवश्यकताओं को उन्हें समर्पित करके फिर दरिद्रता एवं निर्धनता का जीवन व्यतीत करने लगते हैं। पैग़म्बर हृदय का स्वभाव बदल देते हैं, वह मनुष्य में

www.abulhasanalinadwi.org

ऐसा परिवर्तन उत्पन्न कर देते हैं कि वह दूसरे व्यक्ति की भुखमरी सहन न कर सके। वह मनुष्य में त्याग एवं उत्सर्ग की भावना और सच्ची सहानुभूति पैदा करते हैं। उनको अपनी अपेक्षा दूसरे का जीवन अधिक प्रिय होता है, वह अपने जीवन को त्याग कर दूसरे का जीवन बचाना चाहता है, वह अपने बच्चों को भूखा रख कर दूसरों का पेट भरना चाहता है। वह अपने को संकट में डाल कर दूसरों को आशंकाओं से सुरक्षित रखना चाहता है।

त्याग एवं उत्सर्ग की दो घटनायें

आप मेरे इन शब्दों पर आश्चर्य न करें यह सब ऐतिहासिक तथ्य हैं। हमारी आपकी इस दुनिया में ऐसा हो चुका है। इतिहास में ऐसी घटनायें घटित हुई हैं जो उन कल्पित किस्से कहानियों से कहीं अधिक आश्चर्यजनक हैं जो आज फ़िल्मों एवं चित्रपट पर दिखाई जाती हैं।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस संसार में आगमन के कुछ समय पश्चात की घटना है, कि एक मुसलमान युद्धस्थल में एक घायल भाई की खोज में पानी लेकर निकले कि शायद पानी की आवश्यकता हो तो मैं उनकी सेवा करूं। घायलों में उनको अपने भाई दिखाई दिये जो ज़ख़्मों से निढाल और प्यास से व्याकुल थे। उन्होंने प्याला भर कर उनको प्रस्तुत किया तो ज़ख़्मी भाई ने एक दूसरे घायल की ओर संकते किया कि पहले उनको पिलाओ। यदि घटना का यहीं अन्त हो जाता, तब भी मानवता का सिर ऊंचा करने के लिये यथेष्ठ और इतिहास की एक स्मरणीय घटना होती परन्तु घटना का यहीं अन्त नहीं होता। जब पानी से भरा प्याला दूसरे घायल को प्रस्तुत किया गया तो उसने तीसरे घायल की ओर संकेत किया, इसी प्रकार प्रत्येक घायल अपने पास वाले घायल साथी को पहले पानी प्रस्तुत करने का संकेत करता रहा, यहां तक कि जल से भरा प्याला चक्कर काट कर प्रथम घायल अर्थात् पानी पिलाने वाले के भाई के पास

www.abulhasanalinadwi.org

पहुंचा तो वह दम तोड़ चुके थे, दूसरे के पास पहुंचा तो उनका भी देहान्त हो चुका था इस प्रकार घायलों में से प्रत्येक इस संसार से प्यासा चला गया और इतिहास के पृष्ठों पर अपना स्वर्णमय अमिट चिन्ह छोड़ गया। आज जब कि भाई भाई का गला घोंट रहा है, और एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के मुंह से रोटी का टुकड़ा छीन रहा है, यह घटना प्रकाश स्तम्भ के रूप में प्रज्वलित है।

एक बार मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुछ मेहमान आए, आपके घर कुछ खाने को न था। आपने फ़रमाया, इनको कौन अपने घर ले जायेगा। एक सहाबी हज़रत अबू तलहा अन्सारी रज़ि0 ने अपने को प्रस्तुत किया और मेहमानों को अपने घर ले गये। घर में खाना कम था, घर में यह बात तय हुई कि बच्चों को सुला दिया जायेगा और खाना मेहमानों के समक्ष रख कर दीप बुझा दिया जायेगा। अतएव ऐसा ही हुआ। मेहमानों ने सन्तुष्टपूर्ण भोजन किया और अबू तलहा भूखे उठ गये। मेहमानों को अंधेरे में पता चलने नहीं पाया कि आतिथ्यकर्ता खाने में सम्मिलित नहीं है, और वह खाली हाथ मुंह तक ले जाते रहे।

मानवता का वृक्ष अन्दर से हरित होगा

पैग़म्बर मनुष्य के अन्दर परिवर्तन पैदा करते हैं। वह बाह्य व्यवस्था बदलने का इतना प्रयास नहीं करते, जितना मनोवृत्ति बदलने का प्रयत्न करते हैं व्यवस्था सदैव स्वभाव के अधीन रही है, यदि मन नहीं बदलता, स्वभाव नहीं बदलता तो कुछ नहीं बदलता। लोग कहते हैं कि दुनिया ख़राब है, समय ख़राब है, मैं कहता हूं कि यह कुछ नहीं बल्कि इन्सान ख़राब है। क्या पृथ्वी की दशा में परिवर्तन आ गया, क्या वायु का प्रभाव बदल गया, क्या सूर्य ने ऊष्मा एवं प्रकाश देना बन्द कर दिया, क्या आकाश की दशा में किसी प्रकार का परिवर्तन आ गया, किसी का प्रकृति (Nature) में किसी प्रकार का अन्तर आया। पृथ्वी उसी प्रकार

www.abulhasanalinadwi.org

सोना उगल रही है, उसके वक्षस्थल में उसी प्रकार अन्न का भंडार विद्यमान है, वृक्षों से फलों के ढेर निकल रहे हैं, परन्तु वितरण करने वाले पापी हो गये। यह ज़ालिम जब अपनी आवश्यकताओं की सूची तैयार करते हैं तो पन्नों के पृष्ठ उसके लिये अपूर्ण तथा दफ्तर के दफ्तर उनके लिये कम, और जब दूसरों की आवश्यकताओं पर विचार करते हैं तो पूर्ण अर्थशास्त्र की योग्यता का कौशल उनको संक्षिप्त करने में व्यय कर देते हैं। जब तक यह प्रवृत्ति नहीं बदलती, मनुष्यता आहें भरती रहेगी और कराहती रहेगी। पैग़म्बर हृदय में इन्जेक्शन लगाते हैं, लोग बाहर की टीप टाप करते हैं और इसी पर सारा बल व्यय करते हैं, पैग़म्बर अन्दर के घुन की चिन्ता करते हैं। आज समस्त संसार में यही हो रहा है। मानवता का वृक्ष अन्दर से खुश्क होता चला जा रहा है, कीड़ा उसके गूदे को खाये चला जा रहा है, परन्तु इस युग के बुकरात ऊपर से पानी का छिड़काव कर रहे हैं। वृक्ष की अतः शक्ति तथा उसे विकसित करने की शक्ति समाप्त हो चुकी है और पत्तियों को हरा भरा करने के लिये गैसें पहुंचाई जा रही हैं, जल का छिड़काव हो रहा है कि खुश्क पत्ते हरे हों। पैग़म्बरों ने मनुष्य को मनुष्य बनाने का प्रयास किया। उन्होंने उसे ईमान के इन्जेक्शन दिये और कहा कि ऐ भूले हुए इन्सान अपने मालिक को पहचान, और सोते जागते, चलते फिरते उसी को रक्षक मान। "न उस पर ऊंघ छाती है, न उसे नींद आती है"।

मानवता के सत्य प्रतिनिधि

बस जब तक मनुष्य की अंतरात्मा से प्रेम का स्रोत न उमड़े जब तक हृदय के अन्दर त्याग एवं बलिदान का भाव उत्पन्न न हो मनुष्य का सुधार असम्भव है। अतः वह ऐसा मानवी प्रशिक्षण देते हैं कि उसमें भाई के प्रति त्याग एवं प्रेम और कष्ट उठाने की भावना जागरूक होती है। वह केवल संवैधानिक रूप से दुनिया का इलाज नहीं करते बल्कि वह इन्सान के अन्दर वास्तविक मनुष्यता एवं

इन्सानियत का सार उत्पन्न करते हैं। वह ऐसे वर्ग का निर्माण करते हैं, जो वास्तविक मानवता का प्रदर्शन करके यह सिद्ध कर देता है कि हम पेट एवं सिर के दास नहीं। वह कार्यन्वित रूप से घोषणा करता है कि वह पेट, अभिलाषा, धन दौलत, सरकार अथवा परिवार का पुजारी नहीं। जब तक ऐसा वर्ग सामने नहीं आता मनुष्यता का सुधार सम्भव नहीं हो सकता।

यदि किसी देश में ऐसा वर्ग विद्यमान होता है जो दूसरों के कल्याण के प्रति अपने को भूल जाये तो वह मानवता के सुधार का साधन बन सकता है। इतिहास साक्षी है कि मानवता के प्रति शुभ चिन्ता करने वाले अनेक लोग पैदा हुए और किसी हद तक मानवता की सेवा भी की परन्तु किसी न किसी स्थिति में आप यह पायेंगे कि अन्ततः अपने लिये कुछ प्रबन्ध कर लिया। ऐसे अगणित समाज सेवक हुए हैं, जिन्होंने समाज–सेवा का ब्रत बड़ी कठिन परिस्थितियों में आरम्भ किया, कारावास का कठोर दण्ड सहन किया परन्तु अन्त में अवसर मिलने पर राजगद्दियों पर विराजमान हो गये, उनका यह अधिकार था, वह बधाई के पात्र हैं।

पैग़म्बरों का जीवन

परन्तु खुदा के पैग़म्बर साफ़ सुथरे इस संसार से चले गये। उन्होंने संसार के सुख समृद्धि हेतु अपने सुख शान्ति को त्याग दिया उन्होंने शत प्रतिशत दूसरों के लाभ एवं कल्याण हेतु दुखमय एवं कठोर जीवन व्यतीत कर दिया और लेश मात्र अपने लिये लाभ उठाने का विचार तक नहीं किया। वह और उनके सत्संधी जब और जहां से गुज़रे दुनिया को निहाल कर दिया, दुनिया आज तक उनके दिये हुए बाग का फल खा रही है, जिसकी उन्होंने अपने रक्त से सिंचाई की। वह दूसरों के घरों को जगमगा गये लेकिन उनके घरों में इस संसार से विदा होते समय अंधकार था। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा प्रदत्त प्रकाश झोंपड़ियों, अटालिकाओं, राज–भवनों में समान रूप

www.abulhasanalinadwi.org

से जगमगाया परन्तु जाते हुए उनके घर का दिया मांगे हुए तेल से जल रहा था। जब कि मदीना मुनव्वरा के सैकड़ों घरों में उन्हीं का जलाया हुआ दिया जल रहा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रभाव युक्त शब्दों में .."हम पैग़म्बर न किसी के वारिस होते हैं, और न हमारा कोई वारिस होता है। हम जो कुछ छोड़ें वह सब गरीबों का हक़ है।" इससे बढ़ कर आपका पवित्र कथन–जो कोई मर गया और वह कुछ सम्पत्ति छोड़ कर गया, वह उसके उत्तराधिकारियों को मुबारक हो, हम उससे एक पैसा नहीं लेंगे, परन्तु यदि कोई ऋण छोड़ कर गया तो उसका दायत्वि मेरा है, उसे मैं अदा करूंगा। क्या संसार के किसी सम्राट अथवा बड़े से बड़े नेता ने ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया है। आपका पवित्र जीवन संसार का अद्वितीय दृष्टांत एवं जीता जागता चमत्कार है। आप संसार के समक्ष ऐसा उदाहरण छोड़ गए जिसमें त्याग, उत्सर्ग, प्रेम एवं दूसरों के दुःख दर्द में घुलने के अतिरिक्त अपना लाभ लेश मात्र विदित नहीं होता। आप अरब के एक मात्र सम्राट थे, लोगों के हृदयों पर आपका राज्य था परन्तु संसार से अपना दामन बचाये हुए निःस्वार्थ चले गए। आप ही नहीं बल्कि जो जितना ही आपसे निकट था उतना ही वह लाभ रहित तथा सशंकित था। आपने घरवालियों से स्पष्ट रूप से क़ह दिया कि यदि दुनिया की बहार और ऐश चाहती हो हम तुमको कुछ दे दिला कर भली प्रकार तुम्हारे घरों को विदा कर दें, तुम वहां वापस जाओ और सुख समृद्ध एवं आनन्द का जीवन व्यतीत करो और हम से तलाक़ ले लो। हमारे साथ रहना है तो दुःख दर्द, कटुता क्लेश एवं कठिनाईयां सहन करो, यही इस घर का उपहार है और इसी पर मालिक की ओर से प्रतिफल मिलेगा।

प्रिय मित्रो ! हम चाहते हैं कि फिर इसी प्रकार के जीवन का प्रचलन हो, मानवता की निःस्पृह एवं निःस्वार्थ सेवा एवं निर्लोभ प्रेम का प्रचलन हो, फिर दूसरों के हित के लिये अपनी हानि को

www.abulhasanalinadwi.org

प्रथमिकता दी जाये, फिर ऐसे वर्ग का निर्माण हो जो संकट के समय अग्रसर तथा लाभ प्राप्ति के अवसर पर दूर दिखाई दे।

इच्छाओं एवं अभिलाषाओं की तृप्ति शान्ति का मार्ग नहीं

आज विश्व के समस्त राज्य एवं राष्ट्र इसी धुरी के चारों ओर भ्रमण कर रहे हैं कि विभिन्न जातियों एवं वर्गों को हर प्रकार से सन्तुष्ट किया जाये और इच्छाओं की तृप्ति के लिये अधिक से अधिक साधन जुटाए जायें परन्तु ऐ पाश्चात्य सभ्यता तथा नव–युग के ज्ञानियों यह सुधार एवं सन्तुष्टि का मार्ग नहीं। यहां एक व्यक्ति की इच्छाओं की पूर्ति भी कठिन ही नहीं अपितु असम्भावित है। इच्छाओं की यह दशा कि वह अनन्त और संसार की यह दशा कि वह अपनी समस्त साज सज्जा सहित संक्षिप्त एवं सीमित तथा करोड़ों प्राणियों में संयोजित। वास्तविकता की कसौटी पर परखें और फिर देखें, तो यह संसार सच पूछिये तो एक व्यक्ति की मुंह मांगी इच्छाओं की पूर्ति करने में नितान्त असमर्थ है। यहां किसी संसारिक व्यक्ति की कामनाओं की पूर्ति असम्भव है।

आज संसार के बड़े बड़े ज्ञानी एवं तथा कथित मार्गदर्शक यह कह रहे हैं कि मनुष्य की समस्त इच्छाएं उचित तथा स्वाभाविक हैं, सबकी पूर्ति होना चाहिये, और इसी को कार्यान्वित रूप देने का प्रयास किया जा रहा है।

मित्रो ! यही मौलिक दोष है। इच्छाओं की तृप्ति एवं पूर्ति से मानवता की संतुष्टि नहीं हो सकती। इच्छाओं की तृप्ति से इच्छाओं में कमी तथा मन की शान्ति सम्भव नहीं, यह तो समुद्र का खारा जल है, जितना इससे प्यास बुझाइयेगा, प्यास भड़केगी, आज विश्व में राज्य, संस्थायें एवं सभ्यतायें इसी आदर्श को सामने रख कर कार्य कर रही हैं, कि इन्सानों की उचित, अनुचित

www.abulhasanalinadwi.org

इच्छाओं की तृप्ति के साधन जुटाये जायें, जातियां, वर्ग, जन साधारण एवं व्यक्ति जो कुछ मांगे उनको दिया जाये, इससे शान्ति स्थापित होगी, वातावरण में स्थिरता उत्पन्न होगी, परन्तु परिणाम ––बिल्कुल उल्टा। आज चारों ओर आग .....लगी हुई है, दिल की लगी किसी से बुझती नहीं, इच्छाओं एवं अभिलाषाओं का अलाव जल रहा है, और उसमें प्रत्येक जाति एवं वर्ग ईंधन डालता चला जा रहा है और उसको हवा दे रहा है आज उस अग्नि की ज्वाला आकाश से बातें करने लगी है और जातियों एवं देशों की ओर लपक रही हैं–– आज, "व कूदुहन्नासु वल हिजारा"(1) (उसके ईंधन मनुष्य एवं पत्थर हैं) विदित हो रहा है। लोग इस आग की निन्दा करते हैं, किन्तु विचार करने की बात है, कि यह आग जलाई किसने तथा इस अलाव को किसने प्रज्वलित किया, इस पर तेल किसने छिड़का, इसमें ईन्धन कौन डाल रहा है। इच्छाओं की पूर्ति एवं तृप्ति के मार्ग पर चलने का यही परिणाम है।

आश्चर्यजनक बात यह है कि यही लोग जो अपनी जाति की प्रत्येक मांग एवं इच्छा की पूर्ति आवश्यक समझते हैं और उसके लिये सांत्वना एवं मनोरंजन के साधन जुटाना अनिवार्य समझते हैं, अपनी औलाद के साथ ऐसा मामला नहीं करते। उसकी बहुत सी अनुचित एवं हानिकारक इच्छाओं की रोक थाम करते हैं। बच्चा यदि अग्नि से खेलना चाहे तो नहीं खेलने देते, परन्तु वह उन जातियों की प्रत्येक इच्छा एवं मांग की पूर्ति के लिये तत्पर हैं जो वह कहें। इसका तात्पर्य यह है कि उनको अपनी प्रजा एवं जनता से अपनी संतान के समान सहानुभूति नहीं। यही लोग जो जातियों पर राज करते हैं, उनको प्रसन्न रखने के लिये और व्यक्गित रूप से उनका समर्थन प्राप्त करने के

(1) जहन्नम का वर्णन करते हुए, कुरआन मजीद में उसके बारे में कहा गया है कि "उसके ईंधन मनुष्य एवं पत्थर हैं"।

www.abulhasanalinadwi.org

लिये प्रत्येक वैद्य अवैद्य आकांक्षाओं की पूर्ति आवश्यक समझते हैं। आज किसी देश में कोई ऐसा दल नहीं और किसी व्यक्ति में यह नैतिक साहस नहीं कि वह मनोरंजन एवं भोगविलास के साधनों पर आलोचना करे। आमोद प्रमोद की बढ़ती हुई प्रवृति, मनोरंजन, राग रागनी, नृत्य एवं चित्रकारी के प्रति सीमाओं का उल्लंधन करने की अभिरूचि एवं व्यग्रता पर उंगली उठा सके। आज कोई राष्ट्र ऐसा नहीं जो इन दोष युक्त एवं हानिकारक (Activities) पर आवश्यक नियंत्रण एवं प्रतिबन्ध लगाये और राष्ट्र एवं जाति की अप्रसन्नता मोल ले।

खुदा के पैग़म्बर इच्छाओं में सन्तुलन पैदा करते हैं और यथोचित मनोवृत्ति एवं क्षमता प्रदान करते हैं

खुदा के पैग़म्बरों का मार्ग इससे सर्वथा भिन्न है। उन्होंने उचित अनुचित इच्छाओं की पूर्ति एवं तृप्ति की अपेक्षा इच्छाओं को लगाम दी। उन्होंने इच्छाओं की दशा को मोड़ा और उचित इच्छाओं को इस योग्य समझा कि उनकी पूर्ति की जाये। उन्होंने जीवित एवं जागरूक अंतरात्मा का अविर्भाव किया, इससे जीवन में सन्तुलन एवं हृदय में शान्ति उत्पन्न हुई। तुम्हारी शिक्षा संस्थाओं तुम्हारी प्रयोगशालाओं (Laboratories), तुम्हारे विज्ञान ने संसार को बहुत कुछ प्रदान किया, उन्होंने आश्चर्यजनक अविष्कारों को जन्म दिया, परन्तु इन्सान को स्वच्छ एवं पवित्र अंतरात्मा न दे सके। तुम्हारी इन संस्थाओं ने मनुष्य के हाथ खोल दिये, बच्चों को अस्त्र, शस्त्र तो दिये परन्तु उसका प्रशिक्षण नही किया फलस्वरूप आज वह आज्ञान एवं अनभिज्ञ बच्चे चंचलता का प्रदर्शन कर रहे हैं और स्वतन्त्रतापूर्वक इन अस्त्रों का दुरूपयोग कर रहे हैं। खुदा के पैग़म्बरों ने इच्छाओं पर पहरे बिठाए, आकांक्षाओं में सन्तुलन पैदा किया, विषय वासनाओं के बजाये

www.abulhasanalinadwi.org

अपने पैदा करने वाले एवं पालनहार को प्रसन्न करने की तीव्र आकांक्षा उत्पन्न की, मानुषिक सहानुभूति एवं संवेदना की भावना जागरूक की। उन्होंने सुख सामग्री का अविष्कार तो नहीं किया किन्तु उन्होंने वह प्रवृत्ति पैदा कर दी जिससे ईश्वर द्वारा प्रदत्त तथा मनुष्यों द्वारा उत्पन्न की हुई चीज़ों के सदुपयोग की क्षमता उत्पन्न हो, उन्होंने ज़मीर (अंतरात्मा) बख्शा, यक़ीन बख्शा। आज दुनिया के पास सब कुछ है, यक़ीन नहीं है। आज दुनिया के कारखाने सब कुछ पैदा कर सकते हैं, परन्तु यक़ीन (विश्वास) पैग़म्बरों के कारखाने से मिलता है, आज दुनिया खुदा से डरने वालों से वंचित है, विश्वासरहित है, मानवता की निःस्वार्थ सेवा कौन करे–खुदा का खौफ़ तथा उसकी प्रसन्नता का विश्वास, उसके कुटुम्ब की निःस्वार्थ सेवा की भावना उत्पन्न करता है। मानवता के ऐसे सच्चे सेवक हर नारे से दूर, राज्य की लिप्सा एवं लोभ से पृथक, राजनीतिक चालों तथा राजनीतिक जोड़ तोड़ से बेज़ार, निःस्वार्थ सेवा करते हैं। आज ऐसे सच्चे एवं स्वच्छ सेवकों की आवश्यकता है, जिनके पास कुछ न हो, फिर भी कुछ लेना न चाहें, बल्कि देना ही चाहें।

हमारा संदेश तथा हमारी आवाज़

हम लोगों में इस भावना को उत्पन्न करना चाहते हैं और उनमें इन तथ्यों की तृष्णा एवं पिपासा को लाना चाहते हैं। जिन्दगी केवल खाने पीने का नाम नहीं, मनुष्य का जीवन भौतिक एवं पाशविक जिन्दगी का नाम मात्र नहीं। हम एक नवीन अभिरूचि लेकर आए हैं। आज के भौतिक संसार में यह बात नई जान पड़ती है, वास्तव में यह बात नई नहीं। विश्व में समस्त पैग़म्बर जो प्रत्येक जाति एवं राष्ट्र में आये, यही सन्देश लाए और सबसे अधिक बलपूर्वक एवं स्पष्ट रूप से मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूर्ण एवं अन्तिम रूप से यह बात कही। यह तथ्य चौराहों पर बलपूर्वक करने के योग्य है। लोग पेट

www.abulhasanalinadwi.org

के चारों ओर भ्रमण कर रहे हैं, वास्तविक जिन्दगी सिसक रही है, मनुष्यता की पूंजी, बाजार तथा हाट, गलियों तथा सड़कों, क्लबों तथा चौराहों पर लुट रही है। हम एक आवाज़ लगाने आए हैं, सत्य की आवाज़। संसार इस आवाज़ से अपरिचित एवं अनभिज्ञ है, किन्तु हम संसार से निराश नहीं। इन्सान के पास अब भी अंतरात्मा है, यह अंतरात्मा निर्जीव नहीं, इस पर धूल जम गई, यदि यह परिमार्जित कर दी जाए और इसकी मलीनता दूर कर दी जाये तो अब भी आशा है कि वह सत्य को अंगीकार कर ले और उसमें विश्वास की नवचेतना उत्पन्न हो।

www.abulhasanalinadwi.org

आज संसार पर स्वार्थपरता एवं दुराचार का मानसून आच्छादित है उसे चादरों से रोका नहीं जा सकता

प्रस्तुत व्याख्यान

15 जुलाई 1954 को जौनपुर के टाउन हाल में दिया गया। जिसमें नगर के प्रतिष्ठित तथा चुने हुए विद्वान उपस्थित थे और बड़ी संख्या में ग़ैर मुस्लिम तथा राजनीतिक दलों तथा प्रबन्ध समितियों के लोग मौजूद थे।

अनोखी सभा

प्रिय मित्रों एवं बन्धुओं ! युग की एक रीति है, जो एक लकीर सी बन गई है, और उससे हट कर कोई कुछ कहे या करे तो आश्चर्य होता है। हम आपके नगर में आये और सामान्य रीति से हट कर यह सभा कर रहे हैं। इसका न कोई अध्यक्ष है, न कोई प्रेरक, न ही कोई प्रस्ताव, यहां तक कि हमारा परिचय भी हमारे स्वभाव के बिल्कुल प्रतिकूल हुआ। जिसके अन्तर्गत हमारे बन्धुओं ने बड़े ही मार्मिक, मधुर शब्दों में प्रशंसा की है। जो प्रत्यक्ष रूप से उपयुक्त नहीं सिद्ध होती है। फिर भी प्रेम को ठुकराया नहीं जा सकता है। इसलिय उसे सहर्ष स्वीकार करना पड़ता है। हम आपकी सेवा में उपस्थित हुए, हमारे साथ हमारे सत्तर, अस्सी साथी और हैं। हमने कोई विशिष्ट बात नहीं की, हमारे इसी देश में ही और इसके बाहर भी लोगों ने तन, मन, धन से मानवता की

www.abulhasanalinadwi.org

सेवा की है। हमें मनुष्यता के उपकारियों की सेवाओं को देख कर लज्जा आती है, जिन्होंने अपरिचित रह कर, बिना किसी संस्था एवं सभा के मानवता की निरन्तर सेवा की। भला हो युरोप वासियों का कि अब सभा, संस्था; अध्यक्ष एवं परिचय आदि के बिना समझ में नहीं आता कि कोई कार्य किया जा सकता है। हमने क्या किया? "यहां बस मालिक की इच्छा से आए और उसी की प्रदत्त की हुई ज़बान से बोल रहे हैं।" हमे आपसे स्पष्ट शब्दों में कहना है कि यह माइक्रोफोन जो हमारे आपके बीच बांधा है इसका उपयोग करना भी अच्छा नहीं लगता किन्तु मजबूरी है। मैं ऊपर बैठ गया हूं ताकि अपने भाईयों को भली प्रकार देख सकूं, अन्यथा मैं इस समय जो कहने जा रहा हूं घर की तरह निःसंकोच बात होगी, आप इसे घर की ही सामान्य सभा समझिये।

आंवे का आंवा बिगड़ा हुआ है

सज्जनों ! मुझे आप से जिस विषय में कुछ कहना है वह हमारी और आपकी एक सी समस्या है। सामान्यतः समस्यायें तो बहुत हैं। यदि उन पर क्रमबद्ध विचार किया जाये तो बहुत काफी समय लगेगा और बात बहुत दूर पहुंच जायेगी। यह जीवन की महान दुर्घटना है कि यहां आंवे का आंवा बिगड़ा हुआ है, इसकी ख़राबी की जड़ क्या है, इस पर विचार करना है।

आप नगर पालिका के वाटर वर्क्स (Water Workers) व्यवस्था से परिचित हैं। यदि नलों से विकृत जल आने लगे तो पेट को ख़राब करेगा और उसमें अनेकों रोग के कीटाणु होंगे, तो एक विधि यह है कि व्यक्तिगत रूप से हर एक अपने अपने घर के नल में कपड़ा बांध ले, छान कर जल पिये या उबाल कर पिये। परन्तु बुद्धिमानी यह होगी, कि वाटर वर्क्स को स्वच्छ एवं शुद्ध करने का प्रयास किया जाए। नगर के प्रबन्धक से निवेदन किया जाये कि वह उसे ठीक कराये। यदि हम कपड़ा बांध कर छान कर पी लेंगे तो बहुत से व्यक्ति जो रास्ता चलते अचानक

www.abulhasanalinadwi.org

प्यासे होते हैं, मुंह लगा कर पी लेते हैं, उनकी सुरक्षा का क्या साधन है। इसका आप ही निर्णय कीजिये कि इसमें कौन सा तरीका उपयुक्त है।

आज मानवता का वाटर वर्क्स विकृत हो गया है, जहां से जीवन की नवीन शुद्ध धारा फूटती है वह स्रोत ही दूषित हो गया है। जीवन के विद्युत गृह में खराबी आ गई है, जहां से समस्त नगर को बिजली दी जाती है। मानवता घुलती, पिघलती एवं विलीन होती जा रही है, चोर बाज़ारी, घूस–खोरी तथा धोखे बाजी का बोल बाला है। आज मनुष्य इन सब भ्रष्टाचारों में ग्रस्त है। आज के विचारक इन परिणामों पर झुंझला रहे हैं, परन्तु क्रोध किस पर उतारा जाये, और इसका उत्तरदायी किस को माना जाये?

असली मुजरिम कौन है?

आप तो इन्सान हैं, जानवर भी इस वास्तविकता से विधिवत् परिचित है कि उनका मित्र अथवा शत्रु कौन है, कुत्ता भी मारने वाले हाथ की तरफ़ दौड़ता है, ढेले से नहीं उलझता गदहे की मूर्खता प्रसिद्ध है, उसे ढेला मारिये तो वह भी मारने वाले के पीछे गुस्से में दौड़ेगा, वह समझता है, ख़राबी की जड़ और विपत्ति का स्रोत कहां है। हम आप जानवर से भी गुए गुज़रे। शीश महल में रहते हैं, चारों ओर से ढेले बरस रहे हैं। एक हाथ है जो बरसा रहा है, हमें वह हाथ दिखाई नहीं देता, ढेले पर क्रोधित हो रहे हैं। वह हाथ निश्चिन्त है कि आंखों से ओझल है और दिल खोल कर ढेले बरसा रहा है। बड़े बड़े लाल बुझक्कड़ ढेलों में उलझे हुए हैं। मनुष्यता के सुधार, चिन्तन, मनन में सामान्य रूप से समस्त विचारकों की यही दशा है, हर एक के विचार करने का ढंग (Way of thinking) अलग होता है।

पैग़म्बरों के विचार करने का तरीक़ा

हमारे विचार करने की विधि, पैग़म्बरों की विधि है। हम

पूर्ण रूप से चिन्तन मनन करने तथा पर्याप्त अनुभव के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि पैग़म्बर सिसकती हुई मनुष्यता की समस्याओं को जिस ढंग से हल करते हैं, वही सही ढंग है। जब इस विधि पर, इस आधार पर काम हुआ तो मानवता के हृदय की कसकती फ़ासें चुन–चुन कर निकल गईं, आंखों की सुईयां स्वयं बाहर हो गईं, ऐसे प्रेम एवं सद्भावना का युग आया कि चारों ओर शान्ति एवं सन्तुष्टि का वातावरण उत्पन्न हो गया। कुर्आन मजीद कहता है कि प्रत्येक राष्ट्र एवं जाति में सत्य का मार्ग दिखाने तथा बतलाने वाले आये। उनकी शिक्षाओं पर काल (समय) के पर्दे पड़ गए, कुछ में ज्ञान का अभिमान हो गया, हम शिक्षित हो गये इस लिये हज़ार दो हज़ार वर्ष पूर्व की पद्धतियां पुरातन विदित होने लगीं और इस ढंग से सोचना हमारे लिये लज्जापूर्ण हो गया। परन्तु यह भी कटु सत्य है कि सूर्य अति पुरातन है, फिर भी नई रोशनी वाले सूर्य से आंखें नहीं बन्द कर सकते। अतएव हमने पैग़म्बरों का तरीक़ा अपनाया, और मनुष्यता के सुधार की पद्धति उनसे सीखी।

स्वार्थता एवं दुराचार का मानूसन

वह बतलाते हैं कि प्रत्येक वस्तु का एक मूल तत्व होता है, यदि किसी वस्तु की उत्पत्ति को कोई बन्द करना चाहे और उसके दुष्परिणाम से बचना चाहे तो उसको इस बात का प्रयास करना चाहिये कि उसके मूल तत्व की ही उत्पत्ति न होने पावे। आप एक साधारण उदाहरण से इसको समझ सकते हैं। गर्मियों में समुद्र में भाप उत्पन्न होती है, यह भाप बादलों के रूप में ऊपर उठती है, पहाड़ों से टकराती है और मूसलाधार वर्षा के रूप में बरसती है। हम मानसून को चादर या शामियानों से नहीं रोक सकते। आज संसार में दुराचार का मानसून छाया हुआ है, यह पूंजीवाद का मानसून है, यह स्वार्थता का मानसून है, इच्छाभक्ति लोलुपता एवं विलासप्रियता का मानसून है। हृदय के समुद्र से

www.abulhasanalinadwi.org

स्वार्थ रूपी भाप, इच्छा भक्ति की अभिरूचि जब अत्यधिक बढ़ जायेगी, कामुकता की भावना उसे घुलाएगी तो स्वार्थता का मानसून बरसेगा जिसे चादरों से नहीं रोका जा सकता।

इसका इलाज

हृदय के मानसून को रोकने के लिये खुदा पर विश्वास तथा मरणोपरान्त कर्मों का लेखा जोखा देने का दायित्व उसी के अनुसार फल प्राप्ति में विश्वास करना चाहिय। एक ऐसा व्यक्ति जो इन मूल आधारों को नहीं मानता, अपने पैदा करने वाले, रोज़ी देने वाले स्वामी को नहीं पहचानता, वह संसार पर अधिकार प्राप्त करके इससे लाभ क्यों न उठाए, वह निर्बलता का ध्यान क्यों करे? वह जानता है कि हज़ारों शुभ कर्मों के पश्चात उसे यह अवसर प्राप्त हुआ है, तो जीवन का सुख भोग लो, पूरे मज़े ले लो। जो लोग किसी न किसी तरह अपनी चालाकी और होशियारी से ऊपर आ गए, वह क्यों किसी का अधिपत्य स्वीकार करें, क्यों किसी सिद्धान्त एवं विधान का पालन करें। आज का सुख कल पर क्यों छोड़ दें। यदि मुझे भी मालूम हो जाये कि मृत्यु के पश्चात कोई जीवन नहीं और ले दे कर बस यही ज़िन्दगी है, तो फिर इस जीवन का सुख एवं आनन्द किस दिन के लिये उठा रखूं। अरब देश का एक युवा कवि बड़ा साहसी एवं स्पष्टवादी था। वह कहता है :–

"दो क़बरों के ढेर बराबर है वह अच्छा रहा जो सुख, आनन्द तथा मज़े उड़ा कर गया, सबसे बड़ा मूर्ख वह रहा, जो दुख उठाता रहा। क्योंकि मरने के बाद दोनों को ख़ाक होना है और दोनों का अन्त एक है, तो मैं क्यों अपनी इच्छाओं एवं अभिलाषाओं का गला घूंटूं और किस लिये त्याग करूं। जितना जीवन का आनन्द उठाऊं और सुख भोगूं वही मेरा अधिक़ार है"।

मित्रों ! एक प्राचीन युग के कवि का, जो ईश्वर एवं मृत्यु पश्चात जीवन पर विश्वास न रखता था, जीवन आदर्श है। आज

www.abulhasanalinadwi.org

हमारे इस प्रगतिशील एवं उन्नतिशील युग में भी यही जीवन दर्शन है। आज का दर्शन एवं शिक्षा भी यही है कि खाओ पिये और मस्त रहो (Eat Drink and Be Merry) जब जीवन का यही दृष्टिकोण बन जायेगा तो इससे इसी चरित्र (Character) का निर्माण होगा जो हम देख रहे हैं।

वर्तमान परिस्थिति हमारी स्वाभाविक तथा स्वतंत्र मनोवृत्ति एवं प्रशिक्षण का परिणाम है

नबियों का कथन है कि जिसमें विश्वास न हो, उसमें इच्छाओं एवं अभिलाषाओं का जो मानसून उठेगा वह अवश्य बरसेगा। आज समस्त संसार पर इच्छाओं का मानसून मंडला रहा है। दुनिया के लोग कैसे विचित्र हैं, कि जब समुद्र से भाप उठी, देखते रहे, भारत की ओर बढ़ी, मूक बने रहे, हिमालय से टकराई तो भी शान्त रहे, अब जब टकराकर बरस पड़ी तो कपड़े भीगने का झूठा उलाहना देने लगे। आज समस्त संसार के लाल बुझक्कड़ अमेरिका, यूरोप तथा रूस इसी प्रकार की बोली बोलते हैं। हृदय में उठने वाली घंघोर घटा को बढ़ावा देते हैं और जब इच्छाओं एवं अभिलाषाओं के मानसून बरसते हैं तो उस पर क्रोधित होते हैं। भोग विलास के जल कुण्ड बराबर भरते रहे, और तुम आकांक्षाओं की शिक्षा दीक्षा करते रहे। सदैव उसी का स्वागत, आदर तथा सम्मान किया, जो धन सम्पत्ति में तुम से बढ़ा हुआ है। तुम्हारा आदर्श (Ideal) यह है कि जो जितना धनी है, उतना ही भाग्यशाली और आदर का पात्र है। तुम निरन्तर धन–दौलत की प्रशंसा करते रहे, तुम्हारे निकट आदर एवं सम्मान की कसौटी मालदारी है। मैं कुछ समय पूर्व एक सज्जन से मिलने गया, वह बड़ी बेरूखी तथा लापरवाही से बातें करते रहे, इसी बीच एक सज्जन आए जिनको मैं पहचानता न था, वह बुजुर्ग सम्मान हेतु खड़े हो गये और जब तक वह रहे हाथ जोड़ कर बातें करते रहे, जब वह सज्जन चले गये तो वह कहने लगे कि

www.abulhasanalinadwi.org

यह 32 रूपये फीस वाले डाक्टर साहब हैं। शेख़ सादी(1) ने अपनी एक घटना को लिपिबद्ध किया है। वह एक भोज के अवसर पर साधारण वस्त्र धारण करके चले गये। किसी ने उनकी ओर क्षण मात्र भी ध्यान नहीं दिया, दूसरे अवसर पर वह अच्छे एवं बहुमूल्य वस्त्र धारण करके गये, तो भोज में उनको बड़े आदर एवं सम्मान से बैठाया गया, वह अपने वस्त्रों पर सालन आदि डालते रहे, जब पूछा गया कि आप यह क्या कर रहे हैं, तो उत्तर दिया "भोज तो इन वस्त्रों का है, इन्हीं के सहारे मैं खा रहा हूं, अतः इनका पहले सम्मान कर रहा हूं, भोज मेरे लिये होता तो मैं पहले भी साधारण वस्त्र धारण करके आ चुका हूं"।

आज समस्त संसार में यही हो रहा है। अपने बच्चे को कब बतलाया कि वास्तविक सौजन्य नैतिकता एवं आचरण है। उसने जब होश संभाला आप का यही दृष्टिकोण देखा कि जो मोटर पर आया उसका यथोचित स्वागत किया और जो इक्के पर आया उससे निकृष्ट व्यवहार किया। उसने भी सौजन्य का मापदण्ड नैतिकता एवं मनुष्यता के बजाये मालदारी को समझा तो क्या अनर्थ किया।

खुदा के पैग़म्बर इसके विपरीत ईश्वर का भय एवं उसका सम्मान करने का, नैतिकता एवं सज्जनता को आदर्श बतलाते हैं। हज़रत उमर से अरब के कुछ प्रसिद्व एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति मिलने आये, उनसे कहा गया कि इन्तिज़ार करें, इतने में ग़रीब हब्शी मुअज़्ज़िन हज़रत बिलाल मिलने आये, वह तुरन्त अन्दर बुला लिये गये। मदीना मुनव्वरा के एक और निर्धन सज्जन मिलने आये, बुला लिये गए और यह दरबारे खिलाफत से अपना–अपना कार्य पूरा करके चले गये, मानो पहले से कोई कही हुई बात थी। अरब के सरदार बादशाहों का सा दिमाग़ रखते थे, उन्होंने इसे बहुत महसूस किया। उन्होंने कहा, खुदा की शान ! हमारे सामने यह दीन हीन बुला लिये जायें और हम बैठे रहें, क्या आश्चर्य की बात

(1) एक फ़ारसी के विद्वान एवं दार्शनिक।

www.abulhasanalinadwi.org

है। उनमें से एक समझदार सज्जन बोले – उमर तराजू में तौल–तौल कर व्यवहार करते हैं, इसमें न ग़रीबों का अपराध है, न उमर का, सबको अल्लाह के नाम की ओर पुकारा गया था, यह बढ़ गए, तुम बैठे रह गए। तुम ने अल्लाह के काम का आदर एवं सम्मान नहीं किया वह आज उमर के दरबार में तुम से कहीं अधिक आदर्णीय हैं – कल खुदा के यहां भी तुम से पहले पूछे जायेंगे।

युद्धों का उत्तरदायी कौन?

वर्तमान जीवन पद्धति में मनुष्यता की बड़ाई, धन सम्पत्ति एवं भौतिकवाद का उत्थान है। हमारा साहित्य, हमारी कला–कौशल तथा हमारा शिष्टाचार सब इसी की शिक्षा देते हैं, कि जिसके पास भौतिक साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं और जो जितना धनी हो उतना ही वह आदर एवं सम्मान का पात्र और सज्जन व्यक्ति है। धनी ही वास्तव में मनुष्य है, निर्धन नहीं। आज संसार में सारा उपद्रव एवं भ्रष्टाचार इसी विचारधारा एवं इसी जीवन के आदर्श का है। इसी का परिणाम है कि प्रत्येक व्यक्ति शीघ्राति–शीघ्र धनवान बनना चाहता है और इसके लिये वैध–अवैध तथा उचित अनुचित समस्त साधनों को एकत्रित करता है, इसी लिये कि वह पूर्व अवगत है कि आदर एवं सम्मान हेतु प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की आवश्यकता है। गत दो महायुद्ध धन–दौलत तथा मान मर्यादा की लालसा का परिणामस्वरूप थी। मेरा ट्रेन में एक हिन्दु मित्र से परिचय कराया गया वह छूटते ही कहने लगे कि संसार का समस्त उपद्रव मोलवियों तथा पण्डितों के कारण है, उनकी जीविका इसी पर निर्भर है, उनका पेशा ही यह है। मैंने सम्मान पूर्वक उनसे कहा – कि जी हां प्रथम तथा द्वितीय महायुद्ध मोलवियों तथा पण्डितों की देन हैं, इसी पर वह चुप हो गये। मैं आपसे कहता हूं कि समस्त संसार का रक्त पीने वाले और खून की होली खेलने वाले यहूदियों का गुण रखने वाले

www.abulhasanalinadwi.org

कारखानेदार थे। 1941 के युद्ध में यहूदी कारखानेदारों का हाथ था, उनके हथियारों के बड़े–बड़े कारखाने थे, उनके विक्रय के लिये बड़े–बड़े कारखाने थे, उनके विक्रय के लिये बड़ी–बड़ी मण्डियों की आवश्यकता थी, अतः एक सोची समझी स्कीम द्वारा उन्होंने षड्यंत्र रचे, उपद्रव किये और देशों तथा जातियों को लड़ा दिया। एक कारखाने को चलाने के लिये उन्होंने इतना बड़ा उपद्रव मचाया कि जिसमें लाखों जानें नष्ट हुई और देश के देश नष्ट भ्रष्ट हो गये। आज जातियों को टकराने वाली भावना यह है कि बस हमारी तिजोरी भरे और जो हमारा बोल–बाला हो और हमारा सिक्का चले, हमारी जाति का उत्थान हो। यह बड़े पैमाने के स्वार्थ समस्त अशान्ति एवं उपद्रव की जड़ हैं। संस्कृति, सभ्यता एवं भाषा का विभेद उपद्रव का कारण नहीं हुआ? मैं पूछता हूं – क्या एक संस्कृति, एक सभ्यता तथा एक ही जाति के लोग नहीं लड़ें? हमारे यहां कौरव पाण्डव लड़े हैं, जो एक ही कुटुम्ब के लोग थे, अरब का एक क़बीला दूसरे क़बीले से लड़ा है, जिसकी सभ्यता एंव भाषा एक ही थी। अफ़गानिस्तान में पठान, पठान से, पाकिस्तान में मुसलमान, मुसलमान से और यहां हिन्दुस्तान में हिन्दू, हिन्दू से लड़ता है। इस टकराव में स्वार्थ की भावना कार्य कर रही है, स्वार्थ टकरा रहे हैं, स्वार्थ का धर्म टकरा रहा है।

अन्दर का लावा बाहर को फूंक रहा है

पैग़म्बरों का तरीक़ा यह है कि हृदय का रोग दूर हो, बाहर जो बिगाड़ है वह अन्दर से फूट रहा है, अन्दर का लावा बाहर को फूंक रहा है। हम इसे समझें कि बाहर का विकार अन्दर प्रविष्ट कर गया है, अतः बाहर के सुधार में लग गए। जिस प्रकार हृदय रोग का समस्त प्रभाव शरीर पर पड़ता है, इसी प्रकार समस्त जीवन व्यवस्था पर विचारों एवं मनोवृत्तियों का प्रभाव पड़ता है। पुराने किस्सों में आता है कि एक बादशाह विहार एवं

www.abulhasanalinadwi.org

शिकार करते हुए अपने साथियों से अलग हो गया और उसको रात एक बुढ़िया की झोपड़ी में व्यतीत करना पड़ी। बुढ़िया ने दूध दुहा, तो वह कई किलो हो गया जब बादशाह ने यह बात देखी तो उस पर 'कर' लगाने का इरादा किया, दूसरे पहर बकरी का दूध कम हो गया, बादशाह वहीं बैठा था, बुढ़िया उसको पहचानती न थी, बुढ़िया ने अति खेदपूर्वक कहा – आज बकरी का दूध कम हो गया, कदाचित बादशाह की नियत में बिगाड़ आ गया।

इन्सान इस दुनिया का बादशाह है, उसकी नियत में फुतूर आ गया, उसका दिल बिगड़ गया, इस लिय यह समस्त उपद्रव एवं भ्रष्टाचार दृष्टिगोचर हो रहा है। पैग़म्बर की दृष्टि अति तीव्र एवं दूरदर्शी होती है वह कहते हैं – हृदय का पाप धो डालो दिलों को स्वच्छ रखो उसे ठीक करो। हृदय का बिगाड़ ही तो है कि (Food Control) हुआ, चोर बाज़ारी की उत्पत्ति हुई, और जब (Price Control) हुआ तो खाद्य पदार्थ एवं सामग्री विलुप्त हो गई सर्वसाधरण अपनी मूल आवश्यकताओं को तरसने लगे। जब तक मनुष्य का पापी मन शुद्ध नहीं होता, कुछ नहीं होता, कम्यूनिज़्म (Communism) ने भी इस तथ्य की उपेक्षा की कि बिगाड़ अन्दर से आरम्भ होता है, वहां भी मन की कोई चिन्ता नहीं की गई। मज़दूर भूखों मर रहे हैं और पूंजीवादी उन के रक्त और पसीने पर ऐश कर रहे हैं, उनकी लाशों पर भव्य भवनों का निर्माण कर रहे हैं। उन्होंने ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी है कि हर तरफ मनमानी हो रही है।

नशाबन्दी के प्रयत्न में अमेकिा को असफलता

हमारा समाज दूषित एवं पापी हो गया है, उसमें अत्याचार की प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई है। केवल कहने या शिकायत से संसार का सुधार नहीं हो सकता, मन की शुद्धता तो केवल ईश्वर भय से ही हो सकती है, वह केवल पैग़म्बरों के मार्ग दर्शन द्वारा सुधर सकता है, यदि केवल शिक्षा एवं साहित्य अथवा कला–कौशल एवं

www.abulhasanalinadwi.org

विज्ञान से सुधर सकता तो यूरोप का मन निर्मल हो गया होता। अमेरिका में नशाबन्दी की योजना बनाई गई, इसके विरूद्ध युद्ध छेड़ दिया गया, अमेरिका ने करोड़ों का धन पानी के समान बहाया, एक विशाल अभियान चलाया गया और एड़ी चोटी का ज़ोर शराब बन्दी पर लगा दिया गया, इस के विरूद्ध इतना ज़बरदस्त और विस्तृत साहित्य तैयार किया गया कि यदि समाचार पत्रों, विज्ञपनों तथा पत्रिकाओं को फैलाया जाए तो कई मील तक फैल जाए, परन्तु जितना भी प्रयत्न किया गया, अमेरिका की भद्र एवं शिक्षित जनता को इसकी और अधिक ज़िद हो गई, शराब का उपयोग पहले की अपेक्षा और अधिक हो गया। अन्ततः सरक़ार ने विवश हो कर जाति की हठ एवं संकल्प के मुक़ाबले में हार मान ली और कानून वापस ले लिया। वह इस बात का प्रमाण है कि वाह्य व्यवस्थाओं तथा बुद्धि के मार्ग से जो प्रयास किये जाते हैं वह ही सफल होते हैं और उपयोगी परिणाम नहीं निकलता। अमेरिका की शिक्षित एवं भद्र जनता ने साहित्य के उचित एवं बुद्धिसंगत उक्ति एवं तर्क की लेश मात्र भी चिन्ता नहीं की और अपनी इच्छा एवं अभिलाषा को प्रधानता दी।

देश के लिये भयंकर खतरा

इस देश में जो नैतिक अराजकता फैली हुई है, वह यहां के लिये भीषण आशंका के रूप में विद्यमान है। उपन्यास अनैतिक वातावरण फैला रहे हैं, हमारी आगामी संतानों को निर्लज्जता की बूटी पिलाई जा रही है, चित्र पटों पर पाप खोलकर दिखाया जा रहा है, आंखों से कानों से हृदय में पाप उतारा जा रहा है। पत्र पत्रिकाओं द्वारा पाप का स्पष्ट रूप से प्रचार किया जा रहा है और उसका कोई तोड़ नहीं। हम सफ़ाई से डंके की चोट पर कहते हैं, हमे स्वतंत्रता मिली ईश्वर की एक बड़ी नेमत प्राप्त हुई परन्तु यदि हम नैतिकता एवं आचार व्यवहार पर कन्ट्रोल नहीं रख सकते तो स्वतन्त्रता की भी रक्षा सम्भव नहीं।

www.abulhasanalinadwi.org

यूरोप तथा भारत में अन्तर

यूरोप में सहस्त्रों ख़राबियां हैं, फिर भी वह थमा हुआ है। निःसन्देह पाश्चात्य जीवन में अनेकों नैतिक त्रुटियां एवं दुराचार विद्यमान थे। लेकिन वह कुछ सुव्यवस्थित (Refined) रूप की है। वह छोटी छोटी बातों में सैद्धान्तिक, पाबन्द तथा भव्य हैं। उनमें निम्न स्तर की छोटी–छोटी बेईमानियां नहीं पाई जाती। वह अपने दायित्व की अनुभूति रखते हैं और उनका नागरिक एवं सामाजिक जीवन सुव्यवस्थित एवं नियमित है। मेरे एक मित्र ने बतलाया कि वह लंदन में ब्रिटिश म्युज़ियम में कुछ शैक्षिक कार्य कर रहे थे। लाइब्रेरी के साथ वहां रेस्टोरेंट भी होते हैं और उनमें सामान्यता लड़कियां कार्य करती हैं। वह कहते थे कि मेरा नित्य कार्य था कि जब थक जाता तो होटल में जाकर मछली के कबाब खाया करता और ज़ितने पैसे मुझे बतलाये गए उतने प्रति दिन दे आया करता था। एक दिन जब मैं पेसे देने लगा तो वहां की प्रबन्धिका ने मुझ से कहा, अच्छा आप ही है जो प्रतिदिन दो पैसे अधिक दे जाया करते हैं। हमारा हिसाब बढ़ता था और हम कई दिन से उस व्यक्ति की खोज में थे जो अधिक मूल्य (Payment) चुका कर जाता है आपको ग़लती से दाम अधिक बतला दिये गए, यह आपके पैसे हैं जो अलग रख लिये गए हैं। यूरोपियन लड़की में ईमानदारी का गुण, ईश्वर में आस्था एवं भय के कारण नहीं पैदा हुआ, वहां चर्च फेल हो चुके हैं, जीवन की मान्यताएं भ्रष्ट हो गईं, तो उन्होंने केवल सांसारिक लाभ एवं दृष्टिकोण से व्यापारिक आचरण गढ़ लिये हैं और ऐसी प्रवृत्ति बना ली जो एक सफल व्यापारी के लिये आवश्यक है।

नैतिकता के दो रूप

यूरोप की नैतिकता में सन्तुलन नहीं, उनकी मिसाल वही है कि गुड़ खाये और गुलगुलों से परहेज़। व्यक्तिगत रूप से वह

www.abulhasanalinadwi.org

छोटे–छोटे मामलों में बड़ी ईमानदारी से काम लेते हैं, लेकिन जब अपनी जाति के स्वार्थ का मामला होता है तो यही ईमानदारी जातियों को हड़प कर जाते हैं। व्यक्तिगत जीवन में उनकी यह दशा है कि यदि 9 बज कर 12 मिनट पर आने का वादा करें तो ठीक उसी समय पहुंचे किन्तु जातीय स्तर पर दूसरी जातियों को धोका देने में लेशमात्र संकोच नहीं करते। अरबों के मामले में उनकी कटुनीति एक खुली हुई पुस्तक के समान है। हम स्वयं अपने देश में इसका अनुभव कर चुके हैं। उसमें शिष्टाचार एवं आचरण, ईश्वर भय तथा मृत्यु पश्चात् जीवन में जवाबदेही के कारण नहीं आए वरन् लाभान्वित होने तथा समयानुकूल अपने हित के कारण कुछ नैतिक नियम बनाने पड़े। जब अपने उद्देश्य एवं हित का मामला पड़ा तो बड़े सदाचारी तथा नियम के पक्के, किन्तु जहां और जब भी अपने हित के प्रति आघात की शंका प्रतीत हुई तो बड़ी से बड़ी अनैतिकता एवं धोका देने में उन्हें लेशमात्र लज्जा नहीं आई।

पैग़म्बरों द्वारा सृजित आचार व्यवहार

पैग़म्बरों की शिक्षा से जिस चरित्र का निर्माण होता है वह स्वार्थरहित होता है। जान जाए या रहे वह उच्च आदर्श का परित्याग नहीं करते। रसूलुल्लाह की शिक्षा से ऐसी मनोवृत्ति का सृजन हुआ था कि ख़लीफा (राज्य का सर्वोच्च अधिकारी) उमर इब्न अब्दुल अज़ीज़ जो उस समय सुसांस्कृतिक एवं सभ्य संसार के सर्वोच्च शासक थे, एक रात राज्य से सम्बन्धित कार्य में विलीन थे और सरकारी दीप जल रहा था। एक मिलने वाले सज्जन आ गए वह सलाम करके मिज़ाज पूछने लगे। उन्होंने उत्तर देने से पूर्व दीप बुझा दिया फिर टिमटिमाता हुआ दिया मंगाया। आने वाले ने इस बात का कारण पूछा, तो उत्तर दिया कि वह दीप बैतुलमाल (राज्यकोष) का दीप था, तुम आपस की बातें करने लगे, अतः मैंने उसे बुझा दिया कि यदि इसके प्रकाश

में घरेलू बातें करूंगा तो कल अल्लाह को क्या उत्तर दूंगा। इतनी सावधानी एवं सतर्कता के नमूने कहीं क्रेमलिन (Kremlin) की सीमाओं में दृष्टिगोचर हो सकते हैं। यह नैतिक मूल्य उनके सपनों में भी नहीं आ सकते, वह अधिक से अधिक इतना सोच सकते हैं, और उनके विचारों में उड़ान यहीं तक सीमित है कि प्रत्येक मनुष्य को पेट भर खाना, दवा, इलाज, और रहने का मकान हो, बेगार न लो, कामनाओं का आदर तथा सम्मान करो इत्यादि।

सबसे बड़ी मातृ भूमि के प्रति प्रेम तथा देश भक्ति

हम सीधी सादी बात यह कहते हैं कि हम सत्य मार्ग का आमन्त्रण देने आए हैं। हम इसको सबसे बड़े देश भक्ति एवं मातृ भूमि का प्रेम समझते हैं – हमसे अधिक कोई इसकी सेवा नहीं कर सकता। हम मानते हैं कि देश के हित के लिये ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता है, जिनसे देश प्रगति करे हम उनकी निन्दा नहीं करते देश के लिये विद्यालयों, चिकित्सालयों एवं सफ़ाई के विभागों की आवश्यकता है। देश को यातायात (Communication), सुरक्षा (Defence) तथा अन्य विभागों की निःसन्देह आवश्यकता है। इन सबके उपरान्त भी देश में अन्धेर, अत्याचार एवं दूसरे के पेट काटने का जो भीषण रोग फैलता जा रहा है, उसे न रोका गया तो उसकी मान मर्यादा, प्रतिष्ठा, उसकी स्वतन्त्रता धूल में मिल जायेगी। हम सबसे कहते हैं कि यह देश की सबसे पहली तथा महत्वपूर्ण आवश्यकता है वह समस्त संस्थायें एवं विभाग जिन्हें मैं सर्वप्रथम तथा उपयोगी कह चुका हूं, सब इसके बाद आते हैं। हम इस तथ्य के प्रचार हेतु घर से निकल पड़े हैं कि यदि कोई और इस पुष्य, पवित्र एवं अनिवार्य कार्य को करता है तो उसके साथ सहयोग करते।

हमारा आवाहन

हम बल पूर्वक इन शब्दों की घोषणा करते हैं कि हम इस

www.abulhasanalinadwi.org

देश में हिस्सा बटाने नहीं आये थे, हम उन दोनों देशों को छोड़ कर आये जो स्वयं धन दौलत से माला माल थे, यहां की सम्पत्ति एवं धन दौलत में हिस्सा लगाने नहीं आये थे, हम एक मिशन, एक सेवा भाव लेकर आए थे। हम यहां खुदा के बन्दों को खुदा का वास्तिविक बन्दा एवं भक्त बनाने आये थे। यहां जो मुसलमान आए थे, वह नैतिकता, सद्भाव, प्रेम एवं ईश्वर भक्ति का सन्देश लेकर आए थे, उन्होंने इस देश को कुछ दिया, लिया नहीं। वह यहां से कुछ लेने नहीं आए थे–इसको कुछ देने आए थे। वह रहने आए थे–यहां से जाने के लिये नहीं आए थे, यदि ऐसा सोचते तो अटाला की ऐसी दृढ़ एवं भव्य मस्जिद निर्माण नहीं करते। वह तो खुदा परस्ती (ईश्वर भक्ति) एवं मानव प्रेम के लिये आमंत्रित करते थे। कहां का अरब, कहां का अजम(1), यह सब हमारी बनाई हुई तथा गढ़ी सीमायें हैं। समस्त संसार के जन्मदाता, निर्माणकर्ता एवं स्वामी तथा जीविका देने वाले और विश्व को बिना किसी सहायता लिये हुए एक मात्र चलाने वाले अल्लाह की ओर से वह यह शिक्षा लाये थे। उन्होंने दुनिया से कुछ लिये बिना दुनिया की सेवा की, उन्होंने सच्चे मोतियों से मानवता की झोली भर दी और स्वयं खाली हाथ रहे। अपने बच्चों की लेश मात्र चिन्ता नहीं की और अपने परिवार की ओर से आंखें मूंद कर, पेट पर पत्थर बांध जन साधारण की निःस्वार्थ सेवा की, उनके कष्टों को सुख समृद्धि में बदला, जो आया निर्धनों में वितरित किया, उनकी खाली झोलियां भर दीं, उन्हें सेवक दिये और अपने बच्चों को इससे अलग रखा। एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चटाई पर लेटे थे, सुन्दर शरीर पर चटाई के चिन्ह बन गए थे–हज़रत उमर ने देखा, तो कहा, अल्लाह अकबर, आप अल्लाह के रसूल हो कर कष्ट उठायें और दुनिया का रक्त चूसने वाले ज़ालिम एवं अत्याचारी कालीनों तथा

(1) अरब के अतिरिक्त अन्य देश (अनु0)

www.abulhasanalinadwi.org

मसहरियों पर चैन की नींद सोयें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उत्तर दिया–उमर! ऐसा तो आख़िरत का ऐश है।

मुसलमानों की ग़लती

हम मुसलमानों से कटु वाक्य कहते हैं–हम उनसे कहते हैं, तुम ने इन बातों को माना, तुम्हारा इन पर ईमान है, तुम इन आचार व्यवहार एवं सत्य के आहवान पर परित्याग कर पशुओं के स्तर पर आ गए, तुम अपने आचरण से इस्लाम को बदनाम करते हो, इसके ज्योतिमयी नाम को धूमिल करते हो, तुम संसार के समक्ष नाम मात्र इस्लामी जीवन का चलता फिरता चित्र प्रस्तुत कर रहे हो यही दुखदायी बात है। तुमने जीवन का जो आदर्श प्रस्तुत किया, उसमें कौन सा आकर्षण (Attraction) है पहले तुम जिस मार्ग से निकल जाते थे, अपना चित्र अंकित कर जाते थे देर तक तुम्हारी सुगन्ध का आभास होता था, जैसे मंद पवन तथा शीतल समीर की सौरभयता की देर तक अनुभूत होती है। मुसलमान जिस ओर से गुज़र गए गली कूचों को सुगन्धित कर दिया और जहां से चले आए वहां से संदेशवाहक भेजे गए कि हमारे देश में प्रत्येक वस्तु की अधिकता है, किसी वस्तु की कमी नहीं परन्तु हां, अब मुसलमान नहीं हैं जिन्हें देख–देख कर लोग अपने जीवन में सुधार करें और जो लोगों में निष्पक्ष एवं निष्कपट रूप से न्याय करें। उनकी इच्छा पर मुसलमान भेजे गए। खेद एवं दुख की बात है कि अब तुम ऐसे बन गए कि तुम्हारे न होने से देश में किसी प्रकार कीकमी का आभास नहीं होता। क्या आज तक किसी ने अपने देश से योग्य कलाकार, डाक्टर तथा दस्तकारों को निकाला है? पूर्वी पंजाब में लोहारों की आवश्यकता थी, तो ढूंढ–ढूंढ कर बसाये गये, यदि तुम में शुद्ध आचारण तथा उच्च कोटि की नैतिकता विद्यमान होती तो चारित्रिक अभाव विवश करता कि तुम्हें देश की बहुमूल्य सम्पत्ति समझ कर रखा जाये। तुम्हारे दूध वाले पानी मिलाना पाप समझते, तुम्हारे दर्ज़ी कपड़ा

www.abulhasanalinadwi.org

बचाने को ऐब समझते, तुम्हारे शिल्पकार एवं मज़दूर परिश्रम के साथ पूरा दिन लगकर काम करते, तुम्हारे अधिकारी घूंस को हराम समझते, तो संसार का कोई देश तुम्हारी जुदाई को सहन न करता।

एक नय्या के सवार

अपने देशवासी भाइयों से मुझे हार्दिक प्रेम है, हमारा आपका भविष्य एक दूसरे से सम्बद्ध है, आप अच्छे, तो हम भी अच्छे, आपका दुःख हमारा दुःख। खुदा के पैग़म्बर किसी विशिष्ट देश अथवा जाति को संवारने नहीं आए, वह विश्व के लिए करूणा एवं अनुकंपा का रूप धारण करके आए। "हमने नहीं भेजा मगर आपको सारे जगत के लिय दयावान" खुदा के सर्वोच्च एवं अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकर अरबों के जातीय घमण्ड को चकनाचूर कर दिया, उन्होंने कहा कि अल्लाह ने तुम्हारे वांशिक अभिमान एवं अहंकार को तोड़ दिया, मैं उसे अपने पैरों से रौंद रहा हूं, अरबी को अजमी पर कोई प्रधानता नहीं, न अजमी को अरबी पर तुम सब आदम की संतान हो, और आदम का निर्माण मिट्टी से हुआ था, हम सब एक ही किश्ती (नौका) के सवार हैं। नाव में एक ऊपर की श्रेणी है और एक नीचे की, नीचे वाले यदि उसमें छिद्र करें और ऊपर वाले उनका हाथ न पकड़ें तो नाव डूब जायेगी और नीचे ऊपर वाले सब डूब जायेंगे। आज हमारे देश की जीवन नय्या में छिद्र किया जा रहा है, उसे रोकने का उपाय सोचें इसमें पाजामे धोती की कोई कैद नहीं, किसी विशिष्ट संस्कृति एवं सभ्यता का प्रश्न नहीं, समुद्र किसी के साथ भेदभाव नहीं करता, हमें ईश्वर ज्ञान तथा समझ प्रदान करे, हृदयों में ज्योति प्रदान करे और हम मानवता के दुःख दर्द की अनुभूति करें। अपने इस प्रिय देश को, जिसा पर हमारा अधिकार है, जिसको हमने खून पसीने से सींचा है, हम पैग़म्बरों के मार्ग दर्शन द्वारा बनायें, सवारें। हम

www.abulhasanalinadwi.org

इसको एक नमूने का देश बना दें, जिसमें आस्था एवं विश्वास, आचार व्यवहार तथा मानवता के प्रति सहानुभूति, त्याग एंव उत्सर्ग का वातावरण हो। इसके लिए एक साहसी क़दम की आवश्यकता है–क़दम उठाइये, हिम्मत कीजिये। मैंने कह कर अपने हृदय का भार हलका कर दिया– आप इसके भार को महसूस करें और गम्भीरता पूर्वक इस के लिये कुछ करने का निश्चय करें।

www.abulhasanalinadwi.org

मनुष्य स्वार्थ भक्त भी है और आत्म विस्मृत भी

यह व्याख्यान, 22 जनवरी 1954 रात को 7:30 बजे, टाउन हाल गाज़ीपुर के एक जन सहूम मे दिया गया। बड़ी संख्या में हिन्दू मुसलमान तथा शिक्षित व्यक्ति उपस्थित थे।

मनुष्यों एवं पशुओं में अन्तर

मित्रों तथा भाइयों ! पशुओं तथा मनुष्यों में एक बहुत बड़ा अन्तर है, और वह यह कि पशुओं में अपनी दशा के प्रति असंतोष तथा अपने जीवन को उन्नतिशील बनाने की कोई क्षमता नहीं होती परन्तु मनुष्य इसकी अनुभूति रखता है। हम और आप अपने जीवन से असन्तुष्ट हैं, इस असन्तोष को सामान्य रूप से बुरा समझा जाता है, लेकिन यह असन्तोष, जो मनुष्य के जीवन का सार है, यदि समाप्त हो जाये तो फिर जीवन का गुण एवं अभिरूचि समाप्त हो जाये। प्रत्येक व्यक्ति जीवन की निन्दा करता है और बहुधा बातचीत इसी असन्तोष के विषय पर होती है किन्तु इसको दूर करने का विचार और उसके कारणों पर विवेचना करने के अतिरिक्त इसे दूर करने का कष्ट बहुत ही कम लोग उठाने को तैयार होते हैं। क्योंकि यह एक उत्तरदायत्वि की बात है और मनुष्य उत्तरदायित्व से घबराता है।

यदि किसी मशीन अथवा एक घड़ी में खराबी हो जाये तो उसको गिराने तथा पटकने से वह ठीक नहीं हो सकती जब तक कि उसको सावधानी एवं आसानी से ठीक न किया जाये इसी

www.abulhasanalinadwi.org

प्रकार चिन्तन एवं मनन करना है कि इस समय इन्सानियत की धुरी अपने स्थान से हटी तो नहीं है और यह सारा बिगाड़ एवं असन्तोष मानवता की गिरावट ही का परिणाम तो नहीं है, जिस का दायित्व हम पर और आप पर है।

मनुष्य के लिये सर्वोत्तम प्रिय वस्तु अपना व्यक्तित्व है

मनुष्य को सबसे अधिक अपने व्यक्तित्व से प्रेम है, जिससे जितना सम्बन्ध है वह अपने व्यक्तित्व के सम्बन्ध के आधार पर है, हर मैत्री एवं प्रेम में व्यक्ति का अपना व्यक्तित्व निहित होता है और उसको देखने के लिये एक सूक्ष्य दर्शक की आवश्यकता है। प्रेम के तत्वज्ञान पर विचार कीजिये कि किसी को आपसे प्रेम है तो निःसन्देह आप को भी उनसे प्रेम होगा। औलाद (सन्तान), भाइयों तथा मित्रों के प्रेम में वास्तविक रूप से मनुष्य का अपने से प्रेम कार्य करता है। मानवी प्रेम के लिये मनोवैज्ञानिक सूक्ष्य दर्शक की आवश्यकता है। यदि मनुष्य को अपने व्यक्तित्व से प्रेम न हो तो समस्त ब्रह्माण्ड की व्यवस्था विश्रृंखल हो जाए। अब तो इस बात को स्वीकार किया जा रहा है कि आकर्षण शक्ति का दर्शन भी वास्तव में सम्बन्ध एवं प्रेम का कारण है, जो सर्वजगत को स्थापित रखता है। इस संसार में जो शोभा एवं प्रफुल्लता तथा रंगीनी एवं चहल पहल मालूम होती है, वह सब मनुष्य की अपने व्यक्तित्व से रूचि रखने का परिणाम है। यदि मनुष्य को अपने व्यक्तित्व से रूची न हो तो बाज़ार, कारखाने और कारोबार की सचेष्टता ठण्डी पड़ जाए क्योंकि मनुष्य की अपनी व्यक्तिगत अभिरूचि किसी वस्तु से नहीं बल्कि इन्सान को अपनी जाति का प्रेम दूसरी चीज़ों से प्रेम एवं सम्बन्ध स्थापित करने पर विवश करता है। यह लाखों वर्ष का पुरातन एवं स्वाभाविक तथ्य है। इस संसार में जो कुछ बल, पराक्रम, शोभा एवं व्यवस्था आप देखते हैं, यह इसी का परिणाम है कि मनुष्य अपने व्यक्तित्व से अभिरूचि

www.abulhasanalinadwi.org

रखता है। मनुष्य इस जगत का केन्द्र बिन्दु है और समस्त वस्तुएं इस के चारों ओर घूम रही हैं। यदि मनुष्य अपने व्यक्तित्व से अभिरूचि न रखे और उनको विस्मृत कर दे, अपने अस्तित्व से अवगत न हो और अपने को भूल जाये तो बड़ी अराजकता फैल जाए और बड़ी दुर्दशा तथा अव्यवस्था प्रकट हो।

एक मानसिक ताऊन

मनुष्य के लिये अत्यन्त आवश्यक बात यह है कि वह अपने अस्तित्व को समझे, अपने स्थान को पहचाने और यह जाने कि यह सम्पूर्ण जगत मेरे लिये बनाया गया है और मनुष्य ही इस जगत की सृष्टि का कारण है। साधन को साधन और उद्देश्य को उद्देश्य समझना चाहिये। मानवी इतिहास का यह एक आपत्तिकालीन युग तथा मानसिक प्लेग है कि वह अपने को भूल जाए, अपने उद्देश्य एवं साधन को अलग अलग न पहचाने और साधनों को उद्देश्य समझे। मनुष्य का अपने अस्तित्व को विस्मृत कर देना एक भयंकर रोग है जबकि वह इस बात को भुला दे कि वह किस स्तर पर रखा गया था और उसका क्या स्थान एवं दायित्व है, उसे कौन सा पार्ट अदा करना है और उसका इस जगत से क्या सम्बन्ध है।

इस युग में एक विशेष प्रकार का मानसिक प्लेग फैला हुआ है, जो पूर्व से पश्चिम तक है। प्रत्यक्ष रूप से तो मनुष्य अपने व्यक्तित्व के प्रति इस युग में इतनी रूचि रखता है, कि उसके लिये जो प्रयास एवं परिश्रम करता है और जो अविष्कार एवं अन्वेषण सामने आ रहे हैं, वह यह धोका देते हैं कि मनुष्य को अपने व्यक्तित्व के प्रति जितनी रूचि इस युग में है, ऐसी रूचि किसी युग में नहीं रही, मनुष्य पूर्वकाल में मानो सोया हुआ था, अब जगा है। जीवन को जैसा जटिल तथा आनन्दमयी बना दिया गया है, वह यह दावा करता है कि इन्सान को इस समय पहले से कहीं अधिक अपने से रूचि है। मनुष्य अपने व्यक्तित्व के लिये

www.abulhasanalinadwi.org

जिस विवेक का प्रदर्शन कर रहा है और जिस बल एवं शक्ति को प्रयोग कर रहा है, ऐसा इतिहास में कभी नहीं हुआ और अब ऐसा प्रतीत होता है कि वास्तविक रूप से मनुष्य को अपने से असीम विमुग्धता है। विविध प्रकार के नवीन वस्त्र, भोजन, ऐश्वर्य वाली वस्तुएं, आनन्द तथा सुगमता के कितने साधन उपलब्ध हो गए हैं।

एक युग की आत्म विस्मृत

मैं यही निवेदन करूंगा कि वास्तव में मनुष्य ने अपने अस्तित्व अपनी आत्मीयता, अपने सत एवं सार, अपनी मूल अभिरूचि तथा अपने वास्तविक स्वाद को जितना इस युग में भुलाया, कदाचित् ही कभी भुलाया हो। इन्सान इस समय सब से कम अपने अस्तित्व तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं की ओर ध्यान देता और जो चीज़ें उसके लिये उत्पन्न की गई थीं, उन पर अपनी भेंट चढ़ा रहा है। वाह्य रूप एवं अनावश्यक वस्तुएं, मिथ्या आवश्यकतायें तथा ऊपरी स्वाद ने उसे ऐसा जकड़ रखा है कि उसने अपनी अर्न्तात्मा एवं मूल तथ्यों को सर्वथा भुला दिया है अथवा उस ओर ध्यान देने का कोई महत्व ही नहीं समझता है।

यह युग वास्तव में दो परस्पर विरोधी (पक्ष) पहलू रखता है, एक वाह्य दूसरा आंतरिक। यदि परीक्षण कर के देखा जाए तो परिणाम यह होगा कि प्रकृतिवाद एवं भौतिकवाद के युग में मनुष्य ने अपनी आध्यात्मिक सत एवं सार और वास्तविक उद्देश्य तथा जीवन के मूल आधार को बिल्कुल भुला दिया है, जिसका उदाहरण मनुष्य के इतिहास में मिलना कठिन है, और आश्चर्य की बात यह है कि अपने कर्तव्य को नहीं पहचानता, अपने रोग के प्रति गम्भीरता पूर्वक विचार भी नहीं करता—उसके साधन, साध्य बन गए हैं। इन्सान उन चीज़ों पर कैसे अपने जीवन को निछावर कर रहा है। जो उसी के लिए हैं। क्षण मात्र विचार कीजिये, क्या मनुष्य अपने अस्तित्व से भली भांति परिचित है, अपने जीवन का अवलोचन कीजिये क्या मनुष्य अपने वास्तविक आनन्द को याद

www.abulhasanalinadwi.org

करता है? कदापि नहीं, बल्कि मनुष्य पर एक पागलपन सवार है और वह एक विचित्र खेल, खेल रहा है, प्रातः से सांयकाल तक बस एक चक्कर में व्यस्त रहा है, जानवरों से अधिक परिश्रम करता है। अधिकांश मनुष्य ऐसे हैं जिन्होंने अपने आपको रूपया ढालने की मशीन समझ रखा है।

व्यर्थ का परिश्रम

मेरे बाल्य काल में बच्चे एक खेल खेला करते थे कि बुढ़िया बुढ़िया क्या ढूंढ़ रही है? सूई–सूई को क्या करेगी? थैली सियूंगी। थैली सी कर क्या करेगी? रूपया रखूंगी, रूपये का क्या करेगी, गाय खरीदूंगी। गाय का क्या करोगी, दूध पियूंगी उधर से उत्तर मिलता, दूध के बदले "मूत्र"। आज समस्त संसार यही खेल खेल रहा है आज समस्त संसार को अपने परिश्रम के प्रतिफल के रूप में जो प्राप्त करना चाहिये था. उसके बजाए व्यर्थ एवं निरूद्देश्य वस्तुओं में उलझ कर रह गया है। मनुष्य शिक्षा ग्रहण करता है और शिक्षा इस कारण कि धन कमाये और धनोपार्जन इस लिये करता है कि सुख एवं आनन्द उठाए। अनवरत चलने वाली क्रिया है जो समस्त संसार को जकड़े हुए है। वास्तव में मनुष्य के लिये जिसने सब कुछ किया वह उसी को भूल जाता है। आज जीवन के वास्तविक उद्देश्य को सर्वथा विस्मृत किया जा चुका है। जीवन की समस्त यात्रा को एकाग्रचित रूप से अध्ययन किया जाये तो ज्ञात होगा कि मानवता ने जिस उद्देश्य से इस यात्रा का शुभारम्भ किया था, वह उसका मार्ग कदापि नहीं।

मुद्रा की मनुष्य पर अधिपत्ति

मुद्रा किस लिए है? उसका मूल्य यही तो है कि मनुष्य उसमें काम ले, आपने निर्जीव सिक्के में जान डाल दी, किन्तु मुद्रा का अर्थ यह तो नहीं कि आप उससे प्रेम करें। उससे जो काम लेना चाहिये था, वह नहीं लिया जाता बल्कि सिक्का इस समय

www.abulhasanalinadwi.org

मनुष्य पर सत्ताधारी के रूप में है। इसी मुद्रा के कारण संसार में दो महायुद्ध हुए। आपने उपाधियों तथा कुर्सियों को अपने ऊपर अधिकारी बना लिया। इन्सान ने. इन्सान के विरूद्ध भयंकर एवं घातक अस्त्रों का प्रयोग किया। मनुष्य ने मनुष्यता के प्रति अवज्ञा की, विद्रोह किया, जिसके फलस्वरूप मनुष्य को मनुष्य से सहस्त्रों गुना हीन वस्तुओं को अपना अधिकारी बनाना पड़ा। वे वस्तुयें जिनमें जान नहीं, ज्ञान नहीं, कोई ज्येष्ठता नहीं, वह मनुष्य पर प्रभुत्वशाली हैं। यह एक विचित्र एवं शिक्षाप्रद परिस्थिति है कि उत्कृष्ट एवं उत्तम जीवधारी पर उसके बनाए हुए नियम तथा निर्जीव वस्तुएं शासन करें।

साधन साध्य बन गए

इस संसार में अधिकांश व्यक्ति ऐसे हैं जिनको यह ध्यान भी नहीं कि उनका स्थान एवं जीवनोद्देश्य क्या है। जो चीज़ें मनुष्य के उद्देश्यों की प्राप्ति का केवल साधन मात्र हैं, उन पर ऐसा परिश्रम किया जा रहा है मानो वही मुख्य उद्देश्य हैं। मुख्य उद्देश्यों को भुला कर मनुष्य लोलुपता के जाल में फंसा हुआ है, मनुष्य चाहता है कि दूसरों पर अधिपत्ति एवं शासन करे, परन्तु जब एक को दूसरों पर विजय प्राप्त होती है तो उस विजयी पर दूसरी वस्तुएं शासन करती है। एक जाति क्या एक व्यक्ति भी गवारा नहीं करता कि उस पर दूसरा शासन करे, किन्तु मनुष्य से कहीं अधिक ही एवं तुच्छ वस्तुओं को यथा–वस्त्रों को, कोठियों को, रूपया को आज हमने अपने ऊपर शासक का रूप दे रखा है। मनुष्य पर, आज इच्छाओं का, अपने बनाए हुए नियमों का तथा जड़ पदार्थों का शासन है। यद्यपि इन वस्तुओं में कदाचित कोई आकर्षण नहीं और वह किसी भी प्रकार से हमारे लक्ष्य एवं उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकते, किन्तु हमने जड़ पदार्थों को मानव जाति पर प्राथमिकता दी..... हमने पेड़ पौधों एवं वृक्षों को मनुष्य से प्रधान समझा। यद्यपि हम में आज लाखों मनुष्य

www.abulhasanalinadwi.org

वास्तविक सुख एवं समृद्धि से वंचित हैं, और उसका कारण यही है कि मनुष्य ने मनुष्यता को भुला दिया है और उसमें आत्म विस्मृति–आच्छादित है।

निःसन्देह हम लोग भूल चुके हैं कि हमारा सही स्थान क्या है। हमारी अनुचित गतिविधि से ही समस्त संसार में अव्यवस्था का बोल बाला है। आज हम उच्च पदों के लिये जान देते हैं और अपने वास्तविक आदर एवं सम्मान तथा मूल भूत एवं आनन्द को विस्मृत कर चुके हैं। भूगोल किस कारण है, यदि इस संसार में इन्सान न पैदा होता तो भूगोल एवं इतिहास की क्या आवश्यकता थी। समस्त शास्त्र एवं कला कौशल मनुष्य ही के लिये तो हैं, फिर यह क्या है कि इन्सान अपनी पोज़ीशन (Position) नहीं समझता और अपनी वास्तविकता को भूलता चला जा रहा है। आपका इस दुनिया से क्या सम्बन्ध है, हम किस लिये आए, क्या हम इस दुनिया में इस कारण भेजे गये कि नदियों पर दौड़ें, और हवा में पक्षियों के समान उड़ें और भौतिक प्रगति को अपने जीवन का उद्देश्य बनालें। हमारे जीवन का जो आवरण है उसमें निरन्तर झोल पड़ते जा रहे हैं और मानवता का आंचल आज तार तार है। खुदा के उत्तम एवं निर्वाचित बन्दे जिन्हें पैग़म्बर कहते हैं संसार में इसी कारण पधारे कि मनुष्य को उसके स्थान तथा जीवनोद्देश्य से अवगत करायें और उन्होंने एक सरल एवं स्पष्ट सिद्धान्त बनाया कि मनुष्य अपने पैदा करने वाले तथा स्वामी के लिय बनाया गया है और यह सारी सृष्टि उसी के लिये रची गई है, यदि हम और आप यह समझ लें कि हम इस संसार के अमीन, ट्रस्टी तथा रक्षक एवं नियंत्रक हैं तो निःसन्देह हमारी और आपकी जीवन पद्धति में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ जाए और संसार में जो उपद्रव एवं अत्याचार का बोल बाला है, अवश्य दूर हो सकता है।

www.abulhasanalinadwi.org

धनी बनने की होड़ एवं दौड़

परन्तु यदि आप यह समझ बैठे कि आप केवल रूपय ढ़ालने की मशीन हैं तो मानवता के आंचल में झोल पड़ते ही जायेंगे। अगणित संख्या में धन कमाना जब आपका जीवनोद्देश्य होगा, तो न आप मानवी सम्बन्धों का ध्यान रखेंगे न किसी के हृदय को ठेस पहुंचाने में लज्जा होगी और न किसी पर अत्याचार करने में हिचकिजायेंगे। यदि आप का आदर्श (Ideal) यह होगा कि जीवन केवल सुख तथा आनन्द उठाने, धनी बनने तथा न्यूनतम समय में शीघ्रतिशीघ्र धन समेटने का नाम है, तो फिर उसका परिणाम यही होगा, जो आज हमारे समक्ष है। चाहे मानवता का गला घूट जाए चाहे मनुष्यता नष्ट भ्रष्ट हो जाये, किन्तु प्रत्येक मनुष्य धनी बनने की इस दौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने का प्रयास कर रहा है। समस्त नैतिक आदेश एवं निर्देश ताक़ पर रखे हुए हैं और प्रत्येक नगर में इस दौड़ का मैदान गर्म है। दफ्तरों में शाम होने से पूर्व क्लर्क चाहता है कि जेब भरे। इस समय दर्शन, काव्य तथा ललित कला का उद्देश्य भी धनोपार्जन तथा ख्याति प्राप्त करना मात्र है, और पाश्चात्य देशों में तो आध्यात्मिकता का उद्देश्य भी धन कमाना और कीर्ति प्राप्त करना है तथा विलायत में तो आध्यात्मिकता का उद्देश्य भी यही बन गया है कि किसी प्रकार धन प्राप्ति हो।

मुद्रा के आचारण

आप जिस वस्तु से प्रेम करेंगे उसका प्रतिबिम्ब आप पर अवश्य पड़ेगा। आज रूपये के प्रेम का प्रतिबिम्ब भी समस्त मानव जाति पर पड़ रहा है। आज रूपये की प्रतिष्ठा तथा उसकी महानता हमारे मस्तिष्क तथा हृदय में प्रविष्ट हो चुकी है सम्पूर्ण ध्यान ज्ञान आज इस मुद्रा के ध्यान में छिप चुका है। इस मुद्रा में निर्गुण अर्थात् कठौरता, अदृढ़ता एवं विश्वासघात पाया जाता है।

www.abulhasanalinadwi.org

आज सारा जीवन परिश्रम करने के उपरान्त और धनोपार्जन अधिकाधिक करने पर भी, संसार को वह लाभ नहीं होता जो मुद्रा का उद्देश्य था, क्योंकि मनुष्य के प्रति सहानुभूति एवं सेवा भाव के बिना सुख एवं शान्ति की प्राप्ति सम्भव नहीं, मानव के प्रति अन्याय इन्सानियत का खून है। आदर्श का शासन हर युग में रहा किन्तु किसी युग में भी मानवी जीवन का यह आदर्श नहीं रहा है कि धन की प्राप्ति के लिये मनुय का मृदुल एवं कोमल हृदय भी मिले तो उसको रौंदता चला जाये। मानवी आचार व्यवहार आज हम से विदा हो गये, मुद्रा के नाम पर आज इन्सान इन्सान का बैरी बना हुआ है!

व्यापार एवं खरीदार

आज एक भाई अपने सगे भाई को ग्राहक अथवा खरीदार की दृष्टि से देखता है और सारी दुनिया दो वर्गों में विभाजित हो कर रह गई है– एक व्यापारी तथा दूसरा ख़रीदार। आज संसार को आवश्यकता है कि सारा जीवन इसी बाजार में व्यतीत करे। आज की दुनिया में व्यक्तियों में पारस्परिक सम्बन्ध एवं एक दूसरे के प्रति अपनत्व की भावना तथा उनके हृदयों पर मनत्व की छाप छोड़ना और एक दूसरे के अधिकार को समझने की चेष्टा बिल्कुल समाप्त ही कर दी है। इस संसार में मानो समस्त सम्बन्ध समाप्त हो चुके, समस्त भाव ठन्डे पड़ गये, और सारी प्रेम भावनाएं उठ चुकीं। अब एक व्यापारी तथा दूसरा ख़रीदार बन कर जीवन व्यतीत करना चाहता है और एक दूसरे की जेब पर नज़र जमाए हुए है। इस धन सम्पत्ति ने संतान के हृदय से माता पिता का प्रेम, शिष्यों के हृदय से गुरूजनों तथा शिक्षकों का आदर एवं सम्मान, मां बाप के दिलों से संतान के प्रति ममता एवं वात्सल्य खो दिया है और सारे संसार ने एक दुकान का रूप धारण कर लिया। निःस्वार्थ सहानुभूति एवं सेवा भाव विनष्ट हो चुका और जीवन का वास्तविक आनन्द लुप्त हो चुका है। प्रत्येक व्यक्ति

www.abulhasanalinadwi.org

दूसरे को ग्राहक की दृष्टि से देखता और सोचता है कि कितना लाभ उठाया जा सकता है, यदि संसार में केवल दुकानदार तथा ग्राहक ही हों तो जीवन का आनन्द क्या ख़ाक होगा?

1947 ई0 से पूर्व अंग्रेज़ों के शासन काल में ऐसे शिक्षक देखने में आए जो पढ़ाने का बिल बनाकर देते थे और एक क्लक्टर साहब ने जिन का लड़का उनके पास आकर ठहरा था, उसके निवास करने का बिल भी बना कर दे दिया था। अब तो इस बात की भी शंका होने लगी है कि निर्जीव तथा बेजान वस्तुयें भी बिल प्रस्तुत करने लगें। वृक्ष अपनी छाया में ख़ड़े होने का बिल बनाने लगेंगे, और पृथ्वी अपने ऊपर चलने का कर लिया करेगी – यह सब जीवन क्या है, एक मण्डी बन गई है, परन्तु सारा जीवन मण्डी में क्यों कर व्यतीत हो।

धन सम्पत्ति की आवश्यकता से कहीं अधिक मान एवं सम्मान

सर्वप्रथम हमारी दृष्टि जब किसी पर पड़ती है तो उसकी वेशभूषा, जीवन स्तर तथा आर्थिक स्तर तथा आर्थिक दशा को देखते हैं, उसके आचार व्यवहार तथा उसकी मनुष्यता का हमारी मण्डी में कोई मूल्य एवं मान नहीं। आज मनुष्य बौनों के तथा बालिश्तियों के समान एक सोने के पहाड़ के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं मगर मैं पूछता हूं कि आज हमें कौन सी वस्तु जीवन का वास्तविक सुख एवं आनन्द तथा आस्वादन प्रदान कर रही है।

पैग़म्बरों ने मनुष्य को बतलाया था कि यदि तुम ने अपने को दुनिया के आधीन बना लिया और अपनी इच्छाओं को अपने ऊपर लागू कर लिया तो यह समस्त जीवन अस्वाभाविक तथा अव्यवस्थित हो जायेगा और ऐसी अराजकता फैलेगी कि यही संसार तुम्हारे लिये नरक बन जायेगा। यदि मनुष्य ने अपने को नहीं पहचाना तो वह अपने स्थान से गिरता चला जायेगा और मनुष्यता बिल्कुल विलीन हो जायेगी।

www.abulhasanalinadwi.org

मानवता का स्तर

पवित्र कुर्आन में बतलाया गया है कि मनुष्य को पैदा करके फ़रिश्तों(1) को उसके आगे झुकाया गया, जिससे यह पाठ मिलता है कि मनुष्यता का यह एक प्रकार का निरादार एवं तृरस्कार है कि अपने श्रृष्टा एवं पालनहार के अतिरिक्त किसी और के आगे नत्मस्तक हो जबकि ईश्वर के बाद फ़रिश्ते ही इस योग्य थे कि उनके आगे झुका जाए, क्योंकि वह ब्रह्ममाण्ड के कर्मचारी एवं प्रबन्धक हैं, वह खुदा के आदेशानुसार वर्षा लाते हैं, हवायें चलाते हैं। जिस प्रकार एक हाकिम एवं अधिकारी अपने प्रतिनिधि का अपने कर्मचारियों से परिचय कराता है, इसी प्रकार खुदा ने मनुष्य के आगे फ़रिश्तों को झुका कर एक परिचय अथवा इन्ट्रोडक्शन (Introduction) कराया कि मानव जाति को प्रलय तक के लिये यह पाठ याद रहे कि वह एक और केवल एक ईश्वर के अतिरिक्त किसी और के आगे झुकने का पात्र नहीं, किन्तु मनुष्य अपने व्यक्तित्व एवं अस्तित्व को विस्मृत करके मानवता की भर्त्सना एवं तिरस्कार कर रहे हैं।

मनुष्य का वास्तविक बैरी

युद्धों का इतिहास स्पष्ट रूप से अवगत कराता है कि केवल लोलुपता की अग्नि, मन की अग्नि तथा पेट की आग बुझाने के अतिरिक्त राज्यों के सामने कोई महत्वपूर्ण उद्देश्य नहीं रहा। किसी ग्रह अथवा उपग्रह से कोई शत्रु नहीं उतरा, बाहर से कोई सताने के लिये नहीं आया, किसी अन्य देश से भी हमें बरबाद करने कोई नहीं आया, बल्कि जो कुछ हमारी विपत्तियां हैं, वह हमारे ही हाथों की लाई हुई और हमारे नैतिक पतन का ही परिणाम हैं।

---

(1) एक ऐसी सृष्ठि जिनमें पाप होना असम्भव है तथा खुदा के आज्ञा पालन तथा उसकी स्तुति में व्यस्त रहते हैं। (अनु0)

www.abulhasanalinadwi.org

नेत्रों की लोलुपता

मैं घोषणा (Challenge) करता हूं कि कोई दक्ष एवं निपुण अर्थशास्त्री वह सिद्ध करे कि जितनी उपज है उस से अधिक जनसंख्या है, क्योंकि खुदा ने जिस इन्सान को पैदा किया है, उसकी जीविका का साधन भी उत्पन्न किया है, किन्तु आज इन्सान की लोलुपता इतनी बढ़ चुकी है कि वह चाहे एक किलो न खा सके किन्तु अपने पास एक क्विन्टल देखना चाहता है, यह नेत्रों की लोलुपता कभी पूरी नहीं हो सकती। आज अनावश्यक तथा कल्पित प्रयोजनों की सूची इतनी लंबी हो चुकी है कि जिसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकती। हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करना खुदा ने अपने ज़िम्मे लिया है, किन्तु ईश्वर ने यह ज़िम्मा नहीं लिया कि आप चार मोटरों की इच्छा करें, आप सिनेमा की लालसा करें, आप धन संचित करने की आवश्यकता समझें। आज अगर इन्सानों में सुख एवं शान्ति उत्पन्न हो सकती है, यदि जीवन आनन्दमय बन सकता है, तो उसका केवल एक ही मार्ग एवं उपाय है और वह है एक अच्छे एवं विशुद्ध संविधान की खोज।

धर्म को किसी सिफारिश की आवश्यकता नहीं

धर्म को किसी सिफ़ारिश की आवश्यकता नहीं। जो लोग धर्म को एक उत्पीड़ित के रूप में प्रस्तुत करते हैं, मैं उन लोगों में नहीं। हमारी विपदायें, हमारी विपत्तियां हमें स्वयं इस बात पर विवश करती हैं कि हम धर्म को अपनायें। आप कब तक हठ करेंगे और कब तक अपनी आंख में धूल झोंकते रहेंगे, आखिर आप को अपने इस निल्बाद एवं कटु जीवन का आनन्द कब तक आता रहेगा। आज मैं विश्वास के साथ कहता हूं कि कोई क़ानून और कन्ट्रोल इन्सानों को अनैतिकता एवं अपराध से नहीं रोक सकता बल्कि खुदा का ख़ौफ़, उसका धर्म से सम्बन्ध तथा मनुष्यों से प्रेम ही हमारे रोगों का एकमात्र इलाज है। आज खेद एवं दुख

www.abulhasanalinadwi.org

की बात है कि इस विस्तृत एवं लम्बे चौड़े देश में जिसमें करोड़ों इन्सान बसते हैं और बड़े से बड़े इन्सान हैं जो हमारे गर्व का कारण हैं, किन्तु नैतिक त्रुटियों को दूर करने और आध्यात्मिक एवं मानवी जीवन को प्रचलित करने के लिये कोई आन्दोलन तथा कोई संख्या दिखाई नहीं देती।

हमने बहुत प्रतीक्षा की और अन्त में यह निर्णय किया कि जो कुछ हमसे बन पड़े उसको आरम्भ कर दें।

स्वतन्त्रता की सुरक्षा

मैं आपको सचेत करता हूं कि स्वतन्त्रता प्राप्त करना तो बहुत अच्छा है, किन्तु उसको स्थायी रूप देना असम्भव है जब तक कि हमारा नैतिक स्तर शुद्ध न हो और हमारे जीवन में मानवता की भावना न जागरूक हो। संसार का इतिहास बतलाता है कि कोई देश और कोई सरकार बिना नैतिक उन्नति तथा मानवता की स्थिरता के सुदृढ़ नहीं रह सकती।

आज यह काम प्रत्येक वर्ग तथा प्रत्येक स्तर के लिये आवश्यक है। आप इस विश्वास के साथ इसे सहयोग करें कि बिना निःस्वार्थ सेवाभाव तथा नैतिक श्रेष्ठता और मानवता की जागृति के हमारे जीवन की विपदायें दूर नहीं हो सकती।

यूरोप जीवन से विवश है

यूरोप जो आज संसार का नायक बना हुआ है, अपनी भौतिक उन्नति के साथ साथ जीवन से निराश हो रहा है और जीवन के वास्तविक आनन्द तथा सुख एवं शान्ति से वंचित और खाली हाथ है तथा अपने भौतिकवाद से हताश हो रहा है।

मुसलमानों का मूल कर्तव्य

मुसलमानों से मैं स्पष्ट रूप से खुल कर कहता हूं कि आपको जितना आग्रह खुदा के एक होने पर, ईश्वर के अस्तित्व पर तथा खुदा के दीन पर है उसका तक़ाज़ा यह था कि आप

www.abulhasanalinadwi.org

संसार में इस ऐलान को फैलाते और इस दिये हुए तथ्य को उभारते, दूसरे भाइयों को यह भूला हुआ पाठ याद दिलाते। किन्तु आपने तो इसकी चिन्ता तक न की। आप दूसरे देशों पर विचार करना छोड़ दें, अपने पूर्वजों के इतिहास पर दृष्टि डालिये कि स्पेन, में बेड़ा डाल देने पर जब तारिक़ ने अपने जहाज़ों को आग लगवा दी– जब उनसे पूछा गया कि ऐसा क्यों किया तो तलवार पर हाथ डाल कर उत्तर दिया कि – जो कायर जहाज़ों को अपना उपास्य बनाये हुए हो, वह निराश हो जाये। परन्तु हमारा उपास्य तो केवल एक अल्लाह है, जो जीवित है और सदा रहने वाला है। हम उसके सन्देश को लेकर आए हैं और अब हमें इसी देश में जीना और मरना है। आप इस देश में तौहीद (एकेश्वरवाद) का उपहार दे सकते हैं और यह उपहार स्वीकार करने योग्य है। मैं मुसलमानों से कहता हूं कि तुम इस देश में रहने का दृढ़ निश्चय करो, कोई माने या न माने किन्तु तुम इस तथ्य को स्वीकार कर लो।

प्रत्येक वस्तु अपने स्थान से हटी हुई है

इस देश का सुधार उस समय तक नहीं हो सकता, जब तक कि निःस्वार्थ सेवा, शुद्ध भावना, समानता तथा भाई चारा और मानवी सहानुभूति की भावना उत्पन्न न हो। मनुष्य के जीवन का मुख्य स्थान और वास्तविक उद्देश्य ईश्वर का प्रतिनिधि (ख़लीफ़तुल्लाह) होना है किन्तु तुम इस सिक्के के पावं तले अपना सिर रखने लगे, तुमने सिक्के को जेब में स्थान देने के बजाये अपने मन एवं मस्तिष्क में जगह दी। घर घर जो शिवाला तथा मस्जिद बनी हुई है, वह धन दौलत का शिवाला तथा मस्जिद है, जहां रूपये की उपासना की जा रही है। खुदा के प्रतिनिधि तथा सच्चे उपासक बन जाओ इस ज़िन्दगी की चूल बैठ जायेगी। तुम अपने स्थल पर आ जाओ, प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर आ जायेगी।

www.abulhasanalinadwi.org

संसार का वर्तमान असमंजस्य यह नहीं कि बुराई दूर हो, बल्कि यह कि बुराई हमारे निर्देश एवं व्यवस्था में हो

यह व्याख्यान रविवार–24 जनवरी 1954 ई0 को 'मऊ जिला आज़मगढ़' में (जो एक बड़ा औद्योगिक केन्द्र है) हिन्दू तथा मुसलमानों की एक संयोजित सभा में दिया गया, जिसमें विभिन्न राजनैतिक दलों तथा धार्मिक विश्वासरों के लोग सम्मिलित थे।

साहसहीन अनुभव

इस समय विश्व का विभाजन (विघटन) बड़ी ही निर्दयता का कार्य है। पहले जातियों तथा साम्राज्यों ने देशों का बटवारा किया था, किन्तु अब राजनैतिक आन्दोलनों ने जातियों तथा मुहल्लों को बांट दिया है। पहले धर्म की ओट में ऐसे उपद्रव नहीं थे जितने आज के सभ्य संसार तथा जनतन्त्रीय युग में दिखाई दे रहे हैं। आज के राजनैतिक मंच लोगों को विभक्त करने के लिये और अपने गुट को बढ़ाने के लिये अग्रसर हैं परन्तु अब भी निःस्वार्थता से पुकारा जाता है तो लोग अब भी उत्तर देने को तत्पर हैं। अभी इस बात की संभावना है कि राजनैतिक प्लेटफ़ार्म के अतिरिक्त भी लोग एकत्र हो जायें। हमने नितान्त मानवी समस्याओं पर विचार करने के लिये आमंत्रित किया। हमारा हृदय प्रसन्न है कि आपने निमन्त्रण स्वीकार किया। आपका राजनैतिक दलों से घबराना आश्चर्य की बात नहीं, मनुष्य अपने अनुभवों से

www.abulhasanalinadwi.org

ही निष्कर्ष निकालता है। मनुष्य निरन्तर जिन चीज़ों को स्वतः होते हुए देखता है, उसी से परिणाम निकालेगा। आज स्वार्थ बस एकत्र करने की प्रथा है, आप हम पर विश्वास करें, हम किसी पार्टी के माउथ पीस (Mouth Piece) या लाउड स्पीकर नहीं हैं, हमारे सामने विशुद्ध मानवी समस्या है।

सब ठीक हो रहा है परन्तु मेरे तत्वावधान में होना चाहिये

मित्रों ! इस समय मनुष्य वास्तविक विगाड़ से आंखें बन्द कर के कहता है कि सब ठीक हो रहा है, परन्तु मेरे प्रयोजन से होना चाहिये, जो कुछ हो मेरे निर्देशन तथा चौधराहट में हो। अनैतिकता एवं बेमुरव्वती, चोर बाज़ारी, धन दौलत समेटने की हवस सब ठीक है लेकिन उसका अधिकांश हमारे सिपुर्द हो तो भला है। आज सबके दिल की इच्छा तथा मनोकामना यही है, और जब भी किसी के हाथ में प्रशासन आया है, तो उसने लौट फेर कर वही शासन प्रबन्ध स्थापित किया और थोड़े ही परिवर्तन के बाद बात वहीं रही जहां थी। बिगाड़ के सुलझाने में विभिन्न दलों में कोई मूल मतभेद नहीं, कोई नहीं कहता कि यह सब कुछ जो हो रहा है नहीं होना चाहिये, मानो इस पर आक्षेप नहीं कि कारखाना ग़लत है, बल्कि इस पर क्रोध है कि हमारी छत्र–छाया सिर पर नहीं।

यूरोप तथा एशिया में आज यही भावना कार्य कर रही है

विश्व युद्ध इसी आधार पर लड़े गये। फ्रांस, इंग्लिस्तान, जर्मनी, रूस तथा अमेरिका आदि सब इसी भावना को लेकर उठे। उन्होंने शब्दों को आड़ बनाकर इस बात की मांग की कि उपनिदेशों का शासन प्रबन्ध दूसरों के अधिकार में क्यों है, और दूसरों [illegible] क्यों बना [illegible]। [illegible]

www.abulhasanalinadwi.org

व्याकुल हो कर उनमें से कोई नहीं उठा था, उनमें कोई पवित्र मसीह के धर्म का प्रचार करने तथा संसार से अन्याय दूर करने, अत्याचार एवं दुष्कर्म, फ़हाशी तथा अय्याशी और अत्याचार मिटाने नहीं उठा था, न अंग्रेज़, न जर्मन, न रूस, न अमेरिका– उन्हें अच्छे बुरे, न्याय, सत्य असत्य से कुछ बहस न थी। कदापि उन्होंने यह नहीं सोचा था कि हम संसार को विशुध तथा कल्याणकारी प्रशासन प्रदान करेंगे था मानवता की सेवा करेंगे, उनके निकट एकमात्र लक्ष्य यह था कि सोने चांदी की गंगा बहायेंगे और देशों के धन–धान से लाभ उठायेंगे, वह संसार में अपनी इजारादारी स्थापित करना चाहते थे। यह सब एक ही जीवन व्यवस्था पर विश्वास रखते थे कि समस्त संसार को रौंद कर तथा कुचल कर इन्सानों की लाशों पर भोग विलास के मंच सजायेंगे और मनुष्यता के मलबे पर अपने जातीय वैभव का महल तैयार करेंगे। सब तरसे हुए, नदीदे, धन दौलत के भूखे, इच्छाओं के दास, शराबख़ोर, जुवारी, ईश्वर को भूले हुए, विशुद्ध स्वाभाव के विरूद्ध विद्रोह करने वाले थे। हृदय निर्दयी, मनुष्यता के दर्द से विरक्त, उन्हीं के पद चिन्हों पर आज जातियां तथा देश के देश, वर्ग तथा बिरादरियां, राजनैतिक दल, राष्ट्रीय संस्थायें तथा राष्ट्रवादी राज्य चल रहे हैं। सबकी भावना यह है कि हम और हमारे साथी संगी और मित्र तथा नातेदार मौज करें वह वर्तमान परिस्थिति को अंगीकार कर लेते हैं, उनको वर्तमान परिस्थिति से कोई विभेद नहीं, केवल उन लोगों से विभेद है जिनके हाथ में बागडोर है। वह दुनिया बदलना नहीं चाहते केवल नेतृत्व एवं प्रशासन बदलना चाहते हैं। उनका प्रयास केवल यह है कि दूसरों के स्थान पर हम आ जायें। आपके यहां स्थानीय एवं क्षेत्रीय चुनाव होते हैं। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्युनिस्पेल्टी, टाउन एरिया आदि के नये चुनाव में नये नये लोग आते हैं, परन्तु क्या कोई नई–मनोवृत्ति, नई जीवन व्यवस्था, नई सेवा भावना तथा नई सुधार भावना लेकर

www.abulhasanalinadwi.org

आता है? क्या कोई नया बोर्ड, नई कमेटी, दुराचार की रोक थाम करती है, मानवता की निःस्वार्थ सेवा करती है। हम तो यह जानते हैं कि सब एक ही प्रवृत्ति एक ही सिद्धांत और एक ही भाव लेकर आते हैं। उसी का परिणाम है कि परिस्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता। जीवन की त्रुटियां तथा समाज के झोल जैसे के तैसे बने रहते हैं।

पैग़म्बरों की अभियाचना जी की रूपरेखा (व्यवस्था) त्रुटिपूर्ण है

इस के विपरीत पैग़म्बर कहते हैं कि सिरे से जीवन व्यवस्था त्रुटिपूर्ण है। इसे उधेड़ कर फिर से बनाओ इस में फिर से रंग भरो। इसका उदाहरण ऐसा है, जैसे किसी ने कोट सिला सिलाया ले लिया, वह उसके शरीर पर फिट नहीं होता, वह इसको इधर उधर से कतरता है, खींचता है। पैग़म्बर कहते हैं कि यह बख़िये ग़लत लग गए हैं, जब तक यह बख़िये रहेंगे, इस में झोल ही झोल रहेंगे, इसे उधेड़ कर फिर से बनाओ।

जातियों को घूस दी जा रही है

आज समस्त संसार ने इन्सान को अपनी इच्छाओं में स्वतन्त्र मान लिया है। इन अनुपयुक्त तथा अनुचित इच्छाओं के विरूद्ध भावना उत्पन्न करने के बजाये आज समस्त दल उसे घूस दे रहे हैं। इच्छाओं की घूस, कामनाओं की घूस तथा अनैतिक घूस और एक दूसरे से बढ़ बढ़ कर कह रही हैं कि हमारे हाथ में शासन प्रबन्ध आ गया तो हम तुम्हारी इच्छाओं की पूर्ति करेंगे और तुम को ऐसा करने का पूरा अवसर प्रदान करेंगे। यदि इच्छाओं की पूर्ति तथा स्वतन्त्रता चाहते हो तो हमें वोट दो। आज हर एक यह कह रहा है कि हम सत्तारूढ़ होते ही तुम्हारे ऐश में अभिवृद्धि करेंगे, तुम्हारे जीवन स्तर को ऊंचा करेंगे। मानो उन्होंने मिठाईयां देकर बच्चों की आदतें बिगाड़ दी। उन्होंने उनको मिठाइयों पर

www.abulhasanalinadwi.org

लगा दिया। दुनिया का इन्सान बच्चा है, पार्टियां और राज्य उन्हें इच्छाओं का झूठा झुलावा दे रही हैं। और उनकी आदतें बिगाड़ती जा रही हैं। मनुष्य की दशा यह है कि जितना उसे दिये जाओ वह और मांगता जाता है, फ़िल्म आते हैं तो उसकी हवस और बढ़ती है, यह और अधिक आवेश चाहता और अधिक नग्न चित्र मांगता है। यह विश्व के प्रशासक एवं प्रबन्धक मानवी इच्छाओं पर लगाम नहीं लगाते बल्कि उनकी इच्छाओं के अनुसार देते जाते हैं।

पैग़म्बरों का यह मार्ग नहीं, वह इच्छाओं में सामंजस्य एवं सन्तुलन उत्पन्न करते हैं और कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति की इच्छाओं की पूर्ति अस्वाभाविक है। पैग़म्बर कहते हैं कि मनुष्य का चटोर पन हानिप्रद है, उसको छुड़ाना चाहिये। चाहे बच्चे का दिल बुरा हो, चाहे वह कुछ देर रोये और मचले परन्तु उसको बरदाश्त करना चाहिये और सही मार्ग पर लगाना चाहिये। यह विचारधारा नितान्त भ्रमपूर्ण है कि इच्छाओं को ब्रेक न लगाया जाये और उनकी पीठ ठोंकी जाती रहे और जब उनका बिगाड़ विदित हो जाये तो फिर अचरज से देखा जाये और उलाहना की जाये।

मुंहज़ोर तथा बेलगाम घोड़े की रेस

राजनैतिक दलों की व्यवस्था ठीक नहीं है कि उस जीवन व्यवस्था को अंगीकार कर लिया जाये। मुंहज़ोर, बेलगाम तथा मार्गभ्रष्ट घोड़ा मनुष्यता की खेती को रौंदता चला जा रहा है। आज समस्त दल उसका साइज़ बनाना चाहते हैं। मुंह ज़ोर तथा बेलगाम घोड़ों की रेस है, क्या उनके सामने मानवी अंतरात्मा का कोई मूल्य है, मानवी सहानुभूत की किसी प्रकार की भावना है? यूरोप तथा अमेरिका सहानुभूति तथा समता का नाम लेते हैं, उनकी सहानुभूति का मापक हम सब को ज्ञात है। बेचारे बाहर से सहानुभूति का प्रदर्शन करते हैं, मानो वास्तव में सहानुभूति रखते हैं किन्तु अन्दर वही हवस का भूत है। अत्याचार के वहां पर निराले तथा नये नये ढंग हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

सत्ता एवं पद के योग्य कौन है

मित्रो हम कहते हैं कि जीवन मार्ग मंज़िल से बहुत दूर जा पड़ा, जब तक ईश्वर में आस्था न उत्पन्न की जाये, सुधार नहीं हो सकता, इसके बिना हम अत्याचारी को सतर्क एवं हितकारी नहीं बना सकते हैं। मैं सहसा आपके सामने नहीं आ गया, मैं अध्ययन के आधार पर कह रहा हूं कि जब तक आप विश्वास उत्पन्न न करें मानवता के असली स्वरूप (Model) तक नहीं पहुंच सकते, उसके अन्दर से आदर भाव, पद लोलुपता तथा धन दौलत का प्रेम निकाल दीजिये और त्याग, उत्सर्ग एवं बलिदान की भावना तथा दूसरों के लिये घुलने की भावना उत्पन्न कीजिये। मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा था कि पद उसे मिलेगा जो उसका इच्छुक न हो, वहां यह योग्यता (Qualification) थी। आज उसकी अपेक्षा निर्लज्जता से अपना गुणगान कर शासन पर अधिकार जमाया जाता है। सहाब–ए–किराम इससे भागते थे। हज़रत उमर र0 क्षमा याचना कर रहे हैं कि उन्हें इस भार से मुक्ति दी जाये, उन्हें विवश किया जाता था कि यदि आप शासक हो गये तो प्रशासन कैसे चलेगा। वह जब तक करते थे उसे एक बड़ा उत्तरदायित्व एवं बोझ समझते थे और जब उऋण हो जाते थे तो बड़ी शान्ति का अनुभवन करते थे। हज़रत ख़ालिद र0 को सेनाध्यक्ष (Commander-in-Chief) बनाया गया था, चारों ओर उनकी धाक बैठी हुई थी, ठीक संग्राम के समय मुर्चे पर एक साधारण सी चिट्ठी मदीना मुनव्वरा(1) से आती है कि ख़ालिद विसर्जित किये जाते हैं और उनके स्थान पर अबू उबैदा की नियुक्ति की जाती है, तो लेश मात्र माथे पर बल तक न पड़ा। बड़े उदार भाव से कहते हैं कि यद्यपि मैं इस कार्य को उपासना के रूप में करता था

(1) इस्लामी राज्य की उस समय की राजधानी (अनु0)
(2) हज़रत उमर रज़ि0 उस समय इस्लामी राज्य के उच्चतम पदाधिकारी अर्थात ख़लीफ़ा थे।

www.abulhasanalinadwi.org

तो अब भी उसी लगन एवं बाहुबल से करूंगा और अगर उमर के किये करता था (2) तो विरक्त हो जाऊंगा– फिर लोगों ने देखा कि एक वीर सैनिक के समान उसी प्रकार युद्ध में भाग लेते रहे और उनकी कार्यविधि में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

मान मर्यादा प्रेमी राजनीतिज्ञ

आज राजनैतिक दल से किसी को अलग किया जाता है तो पहले निकलने का नाम नहीं लेता और अड़ा रहता है, उपद्रव मचाता है और अगर अलग होता है, तो दूसरा राजनैतिक दल बना लेता है। यह क्यों? इस लिये कि आदर एवं सम्मान की लोलुपता, दौलत का शौक़ और बड़ाई का ख़याल मन एवं मस्तिष्क पर छाया हुआ है, बस जब तक वर्तमान जीवन व्यवस्था का सांचा नहीं बदलता, सुधार कठिन है। मैं आपको स्पष्ट शब्दों में जीवन के तथ्यों से अवगत करा रहा हूं – ईश्वर का भय तथा उसकी प्रसन्नता की अभिरूचि उत्पन्न कीजिये। आध्यात्मिक तथा नैतिक जीवन पैदा कीजिये, जीवन से आनन्द प्राप्त करने की रूचि जो जीवन का लक्ष्य बन गई है, उसे छोड़िये।

मानवी आवश्यकताओं की सूची अधिक लम्बी नहीं

मानवी आवश्यकताओं की सूची अधिक लम्बी नहीं, सुख साधन की सूची अवश्य लम्बी है सब ने अपने जीवन का आधार Luxuries को बनाया है। जीवन के ऐश–व–आराम को लक्ष्य बनालो, उदार तथा तामस मन को उपास्य मान लो, ईश्वर को बिल्कुल न मानो, उसके आदेशों का निषेध करो, मनुष्य को सम्मुन्नत पशु मात्र मान लो और उसकी अधिक से अधिक इच्छाओं की पूर्ति करो यह सब उसी का विकार है। जब तक यह आधार विद्यमान है हज़ारों प्रयत्नों के बाद भी सुधार असम्भव है। किसी नगर एवं देश की तो क्या एक नगर पालिका के क्षेत्र का भी सुधार न होगा।

www.abulhasanalinadwi.org

विकृत अंशों तथा इकाईयों से अच्छा समूह तैयार नहीं हो सकता

आज मानवी व्यक्तित्व तथा समाज के अंश विकृत तथा निकृष्ट है। अशुद्ध आधारों पर उनका उठान हुआ है और गलत तरीक़ों पर उसका प्रशिक्षण तथा अभिवृद्धि हुई है, परिणामस्वरूप आज समस्त मानवी समूह विकृत, निकृष्ट एवं क्षीण हैं। समूह व्यक्तियों से बनते हैं, जब तक व्यक्ति शुद्ध तथा सदाचारी न होंगे, समूह तथा सामूदायिक कार्य कैसे शुद्ध होंगे। व्यक्ति का प्रश्न छेड़ा जायेतो लोग चिढ़ते हैं और अप्रसन्नता प्रकट करते हैं और इस प्रसंग को टाल देना चाहते हैं और इसी निराधार धारणा में ग्रस्त हैं कि सामूहिक अवस्था में यह त्रुटि स्वयं ठीक हो जायेगी। कैसी हास्य प्रद एवं आश्चर्य की बात है कि जब ईंटें भट्टे से निकलें तो कहने वाले ने कहा कि यह पीला है, यह खण्जड़ है, यह ईंटें अच्छी नहीं हैं, यह भवन के भार को सह न कर सकेंगी। आपने उत्तर दिया–महल बन जाने दो वह सब ईंटें अच्छी हो जायेंगी, परन्तु विकृत तथा दोषयुक्त अंशों से एक अच्छा समूह कैसे तैयार हो सकता है। बहुत से ख़राब सदस्यों से एक अच्छी बाडी (Body) कैसे बन सकती है, खराब तख्तों से एक अच्छा जहाज़ कैसे बन सकता है। हम कहते हैं, युनिट (Unit) ख़राब है, मसाला (Material) ख़राब है, उससे अच्छी बाडी कैसे बनेगी, इससे अच्छी नगर पालिका तथा जिला परिषद कैसे बनेगी? इससे अच्छी गवर्नमेन्ट (Government) कैसे बनेगी? आज सारी दुनिया में यही हो रहा है। Material तो कोई नहीं देखता और परिणाम को देख कर कुढ़न होती है। क्या यह नासमझी की बात नहीं। पैग़म्बर तख़ते बनाते हैं Unit बनाते हैं, ईंटें बनाते हैं उनका निर्माण सुदृढ़, सुचरित्र तथा जानदार होती है, वहां धोका नहीं होता। आज शिक्षालयों में भी इस तथ्य की उपेक्षा की जा रही है।

www.abulhasanalinadwi.org

विश्वास एवं आस्था, नैतिकता एवं सदाचार पैदा करने का प्रयास नहीं किया जा रहा है व्यक्ति के प्रशिक्षण का प्रबन्ध कहीं नहीं, प्रत्येक स्थान से कोरे तथा अप्रशिक्षित व्यक्तियों की खेप की खेप निकल रही है आज विद्यार्थी हर काम कर सकता है, इस लिये कि उसका कोई प्रशिक्षण नहीं किया गया। म्युनिस्पैल्टी में कौन लोग हैं, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड में कौन लोग हैं, प्रशासन में कौन लोग हैं, समस्त शासन व्यवस्था पर इस प्रकार के लोग छाए हुए हैं, उन्हीं के हाथों में जीवन की बागडोर है, आज बहुधा मनुष्य, मनुष्य नहीं, मानव मात्र हैं।

तथ्य प्रकट हो कर रहता है

तथ्य विदित हो कर रहता है। चाहे उस पर कितना मुलम्मा चढ़ा दो। गधे ने बाघ की खाल पहन ली थी, परन्तु जब संकट सामने आया तो भय के कारण अपनी बोली बोल दी। आज सब जगह यही हो रहा है। अन्दर की चीज़ बाहर आ रही है आप में से बहुत से भाई अथक प्रयास कर रहे हैं, आप में से बहुत से Sincere हैं, परन्तु क्या कभी आपने क्रमबद्ध रूप में सुधार का प्रयास किया, लोग पार्टी के सत्तारूढ होने के पीछे पड़े हैं, लेकिन करने का कार्य यह था कि मनुष्यता के प्रति आदर तथा सम्मान की भावना जागरूक हो, ईश्वर का भय उत्पन्न हो।

ईश्वर की नगरी दुकान नहीं है

ईश्वर की नगरी को दुकान समझ लिया गया। प्रत्येक दूसरे को ग्राहक समझ कर मामला करता है — यह व्यापारिक मनोवृत्ति घातक है। आज चारों ओर लेने ही लेने की गूंज है — कहीं विद्यार्थी और शिक्षक में खींच तान, कहीं श्रमिक तथा कारखानादार में चपक़लिश, यह सब क्यों? यह सब इसी व्यापारिक प्रवृत्ति की देन है। पैग़म्बर कहते हैं कि सब के एक दूसरे पर अधिकार हैं और सबके जिम्मे कर्त्तव्य हैं। कर्त्तव्य पालन में सुदृढ़ हों और अधिकार ग्रहण करने में उदार होना चाहिये। हम

www.abulhasanalinadwi.org

यही कहते हैं कि आप लोग भी यही करने लगें तो वातावरण में परिवर्तन आयेगा, जीवन का सच्चे अर्थ में आनन्द प्राप्त होगा। आज लूट खसोट का बाज़ार गर्म है, प्रत्येक की दृष्टि तिजोरी पर है मनुष्य की मजबूरी पर नहीं।

हमारा संदेश

हम अपने सन्देश को प्रत्येक दल अथवा पार्टी के लिये आवश्यक समझते हैं, और हमारा अस्तित्व हर पार्टी से कहीं अधिक आवश्यक हैं, क्योंकि हमारा कार्य हो गया तो मानवता महकता हुआ गुलदस्ता बनेगी। आज कांटे पैदा हो रहे हैं। आज मनुष्य नाम की वस्तु का दूर दूर पता नहीं। हम कहने आये हैं कि इन्सानियत की बहार लाओ, इन्सानियत को निखारो। आज मनुष्यता के वृक्ष से कांटे और कड़वे कसीले फल पैदा हो रहे हैं, आप मनुष्यता के मीठे फल पैदा कीजिये। हम आप लोगों के कार्यों में रोड़ा अटकाने नहीं आये, हम कहने आए हैं कि मानवता की चिन्ता कीजिये। हम इस बिगड़े हुए संसार के विरूद्ध चुभन पैदा करने आए हैं, क्या अच्छा हो कि यह चुभन पैदा हो— यह पैग़म्बरों का कार्य और उनका सन्देश है, हम उसे याद दिलाने आए हैं। कोई मस्तिष्क तक रह जाता है, कोई पेट तक पहुंच पाता है, कोई वस्त्रों एवं भवन में अटक कर रह जाता है, परन्तु सत्य धर्म ईश्वर में आस्था एवं प्रेम के साथ हृदय में उतर जाता है, वह आंखों की खटक और जलन दूर करता है आंखों की सूईयां निकालना पैग़म्बर का ही कार्य है, उन्हीं के प्रयत्नों से दिल की फांसें निकलीं और हृदय को शान्ति मिली।

हम मुसलमानों से कहते हैं कि तुम ने पैग़म्बरों के कार्य एवं सन्देश की अवहेलना की, तुम अपराधी हो। तुम मूल धन को छोड़ कर तिरस्कृत पूंजी पतियों के एजेन्ट बन गए। तुम ने भी व्यापारिक प्रवृत्ति अंगीकार कर ली और व्यापारी बन गये। तुम्हारा स्थान व्यापारी तथा नौकर होने का नहीं था, तुम यहां आवाहन के

www.abulhasanalinadwi.org

रूप में आए थे, तुम अपने मूल स्थान से गिर गए और अपने अस्तित्व का उद्देश्य भूल गए। तुम आवाहन एवं प्रेम के सन्देश के साथ जीते तो सम्मानपूर्वक जीते और सफल एवं कल्याणकारी जीवन व्यतीत करते रहते। अब तुम्हारा कल्याण इसी में है कि तुम अपने खोये हुए पद को ग्रहण करो। संसार का भी कल्याण इसी में है कि वह पैग़म्बरों के कार्य को समझें और आदर करें। राजनैतिक दल और विभिन्न संस्थायें नेतृत्व की लड़ाई तथा कशमकश को छोड़ कर जीवन के इस बिगड़े हुए ढर्रे को बनाने का प्रयास करें और अपने अपने नातेदारों तथा मित्रों की अपेक्षा समस्त मानव जाति की चिन्ता करें कि इसके सुधार के बिना किसी को सुख एवं शान्ति नहीं प्राप्त हो सकती।

www.abulhasanalinadwi.org

उच्च कोटि के नैतिक मूल्य हृदय में विलीन हैं–उनकी खोज बाहर है

प्रस्तुत व्याख्यान, 27, जनवरी 1954 को रात में, गोरखपुर के टाउन हाल में दिया गया। उपस्थित महानुभावों में नगर के शिक्षित हिन्दू तथा मुसलमान सम्मिलित थे।

एक कहानी

मित्रों ! बचपन में एक कहानी सुनी थी, एक सज्जन सड़क पर कुछ ढूंढ रहे थे। लोगों ने पूछा–आप क्या ढूंढ रहे हैं? उत्तर दिया कि जेब से एक अशरफ़ी गिर गई है उसकी खोज कर रहा हूं। कुछ भलेमानुस भी उनके साथ ढूंढने में लग गये। थोड़ी देर बाद किसी ने पूछा, अरे भाई वह अशरफ़ी कहां गिरी थी। कहने लगे, गिरी तो घर में थी मगर मुश्किल यह है कि घर में प्रकाश नहीं है, सड़क पर प्रकाश है अतः यहां ढूंढ रहा हूं।

मनुष्यों में आराम की भावना

वास्तव में तो यह एक कहानी या चुटकुला मालूम होता है, किन्तु अपने चारों ओर की दुनिया में नज़र दौड़ाएं तो यही दिखाई देगा कि जो वस्तु घर में खोई है उसकी आज बाहर खोज की जा रही है। बड़े बड़े मैदानों में आज वही हो रहा है कि घर की वस्तु बाहर तलाश की जा रही है, कोई चीज़ खो तो गई है अपने अन्दर किन्तु खोज उसकी बाहर है, क्योंकि प्रकाश बाहर है। आज बहुत सी ऐसी वस्तुओं की कमेटियां एवं सभाओं में खोज है। सुख,

www.abulhasanalinadwi.org

शान्ति एवं आनन्द अन्दर की वस्तुयें हैं परन्तु उनकी तलाश बाहर है मनुष्यों का भाग्य अन्दर से बिगड़ा है परन्तु बाहर उसको बनाने का प्रयास किया जा रहा है जिस सुख एवं शान्ति की हमें और आपको आवश्यकता है, जिस प्रेम मयी सहानुभूतिपूर्ण तथा सदाचार के वातावरण की हमें और आपको आवश्यकता है, जीवन का तत्व एवं सार और जीवन की बहुमूल्य पूंजी आज विलुप्त है, वह सब दिल की दुनिया में खोया है परन्तु वहां अंधकार है, वहां हमारा गुज़र नहीं, अतः हम उसको बाहर ढूंढते फिरते हैं। हमने बड़ा अत्याचार किया कि पहले हमने दिलों में जाने का रास्ता खोया, अब उन्हीं चीज़ों की बाहर खोज कर रहे हैं। आज संसार के मंच पर यही ड्रामा खेला जा रहा है दिल की दुनिया में अन्धेरा है, वहां वर्षों से घटाटोप अंधकार है, हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता, मानवी स्वभाव सहूलियत पसन्द है उसने कभी यह कष्ट उठाने का प्रयास नहीं किया कि दिल के अन्दर डूब कर खोई हुई बहुमूल्य वस्तुओं की खोज कर ले। उसने इसी को आसान समझा कि बाहर प्रकाश में अपना खोया धन तलाश करे। आज जातियां विस्मययुक्त हैं, बड़े बड़े पण्डित एवं विद्वान परेशान हैं परन्तु उसका सिरा नहीं मिलता कि हमारी खोई हुई पूंजी कहां है। लोगों ने जब देखा कि दिल का द्वार नहीं मिलता और उस पर बस नहीं चलता, उसको प्रकाशमान तथा गर्म करने का कोई साधन हमारे पास नहीं तो उन्होंने मस्तिष्क की ओर ध्यान दिया और मनुष्यों की जानकारी में अभिवृद्धि करना आरम्भ कर दिया। जो काम सुगमता पूर्वक कर सकते थे करने लगे। मस्तिष्क तक पहुंचना आसान था, उन्होंने दिल को छोड़ कर दिमाग़ का मार्ग अपना लिया।

आज प्रत्येक कारवां उसी में सम्मिलित है, जो आ रहा है वही जा रहा है, हृदय के अन्दर पहुंचने का प्रयास नहीं किया। दुनिया की चूल जब तक अपनी जगह पर न आये सुधार असम्भव

www.abulhasanalinadwi.org

है। घर में अंधेरा है तो प्रकाश बाहर से लाना पड़ेगा और घर में खोई हुई पूंजी और मन का लुटा हुआ धन वहीं खोजना होगा, यदि ऐसा न किया गया तो जीवन समाप्त हो जायेगा और उसके चिन्ह मात्र का पता न चलेगा।

तथ्यों से कुश्ती नहीं लड़ी जा सकती

आज इस बात की आवश्यकता थी कि इन तथ्यों को उभारा जाता, मनुष्यों को जीवन के उद्देश्य से अवगत कराया जाता, आपस के सम्बन्ध ठीक होते, मनुष्य पशुओं के स्तर से ऊँचा होता, एक दूसरे से प्रेम व्यवहार होता, एक दूसरे के प्रति त्याग की भावना होती, एक दूसरे को भाई की दृष्टि से देखा जाता, प्रतिद्वन्दिता की भावना समाप्त होती, प्रेम एवं विश्वास की दृष्टि उत्पन्न होती तथ्य गुम हो गया। सबसे बड़ा तथ्य और तथ्यों का सार यह था कि जिसने इस दुनिया के कारखाने की रचना की है, वह उसी की इच्छा एवं निर्देशानुसार ठीक ठीक चल सकता है और अगर उससे लड़ने का प्रयत्न किया जायेगा और उसके निर्देशानुसार काम नहीं होगा तो कारखाना अस्त व्यस्त हो जायेगा। घड़ी का उदाहरण ले लीजिये, जो इसका कुशल एवं प्रवीण कारीगर है, उसकी बनावट से परिचित है, वही उसकी कल ठीक कर सकता है। कोई कितना ही बड़ा विद्वान, पण्डित तथा दार्शनिक हो परन्तु घड़ी उसकी बुद्धिमता तथा ज्ञान से ठीक नहीं हो सकती, वह तो उस कला के दक्ष लोगों के चलाने ही से चलेगी। यह संसार जिसके द्वारा रचा गया है उसी के निर्देशानुसार ठीक ठीक चलेगा। तथ्यों से कुश्ती नहीं लड़ी जा सकती, उसके समक्ष नतमस्तक होना ही पड़ेगा।

मनुष्य संसार का ट्रस्टी है

मैं इस समय आपसे कुछ बेलाग बातें कहना चाहता हूं। धिक्कार है ऐसे जीवन पर जिसमें कभी सच्ची बात न कही जा

www.abulhasanalinadwi.org

सके। आज प्रत्येक व्यक्ति लाभ देखता है और लाभ के ही लिये सत्य असत्य बोलने में किंचित हिचकिचता नहीं। संसार में ऐसे मनुष्यों से सुधार असम्भव है जो दो चार ऐसे आदमी संसार में हैं उन्हीं से दुनिया कायम है, जो सदैव सच्ची बात करते हैं चाहे प्राण चले जायें।

आज संसार के मुख पर जो तेज एवं निखार है, वह उन सत्याभाषी पैगम्बरों, अल्लाह के भेजे हुए इन्सानों के खून–ए–जिगर का परिणाम हैं। जिन्होंने मानवता के अस्तित्व एवं कल्याण हेतु अपने जीवन की बलि दे दी। इस प्रकार यह पवित्र एवं बहुमूल्य पूंजी हमको विरासत में मिली। मानवता की मुक्ति एवं कल्याण का मार्ग वही प्रकाशमयी मार्ग है जिसे उन लोगों ने दिखाया। आज भी जब तक हम यह न समझें कि संसार हमारे लिये है और हम खुदा के लिये हैं, हम उसके ट्रस्टी हैं, और खुदा के सामने अपने कर्मों के अच्छे बुरे होने के उत्तरदायी हैं। मनुष्यों की कठिनाईयां दूर नहीं हो सकती। क्योंकि यह मार्ग मनुष्यता के साथ–साथ सुपन्थ भी है परन्तु कंटका कीर्ण है। यह एक उत्तरदायित्व की बात थी, लोगों ने इससे दामन बचाया और अपनी संस्कृति तथा सभ्यता का नाम लेना आरम्भ कर दिया।

मानवता की समस्या पुरातन सभ्यताओं से हल नहीं हो सकती

संसार की समस्त सभ्यतायें सम्माननीय हैं, विशेषकर अपने देश हिन्दुस्तान की सभ्यता हमें प्रिय है, वह हमारी विरासत है और हम इसका आदर करते हैं परन्तु मानवता की वास्तविक प्रगति एवं उन्नति पुरातन सभ्याओं से नहीं हो सकती, इसमें अब जान नहीं रही, इनकी क्षमता अब समाप्त हो गई, यह अपना मिशन (Mission) पूरा कर चूकीं यह अपना पार्ट अदा कर चुकीं। इसके बहुत से अंग अब भी बहुत अच्छे हैं परन्तु आज मानवता के

www.abulhasanalinadwi.org

उत्थान हेतु और सामान्य रूप से नैतिक पतन को रोकने के लिये इनमें कोई जान नहीं, इनके पास कोई सन्देश नहीं। जिस प्रकार एक स्थान की वस्तु दूसरे स्थान पर समायोजित (Adjust) नहीं की जा सकती, दो हज़ार वर्ष पूर्व की वस्तु आज के वातावरण में काम नहीं दे सकती अरबों की प्राचीन सभ्यता, रूमियों तथा यूनानियों की सभ्यता अपने अपने समय की जीविका तथा समुन्नत सभ्यता थी, लेकिन वह अपनी पल्लविता एवं विकास शक्ति खो चुकी अब उनका स्थान केवल आसारे क़दीमा में हैं।

सभ्यतायें मानवता का वस्त्र हैं मानवता वस्त्र बदलती रहती हैं

मानवता सभ्यता से बढ़ कर हैं। यह समस्त सभ्यतायें मिल कर भी अच्छी मनुष्यता को जन्म नहीं देती, आदमीयत सभ्यताओं को जन्म देती है। आदमीयत किसी विशिष्ट युग एवं स्थान से सम्बद्ध नहीं सभ्यतायें उसका वस्त्र मात्र हैं और अपना वस्त्र बदलती रहती हैं और अपनी आयु एवं अपनी प्रवृत्ति के अनुसार अपने को सुसज्जित करती रहती हैं और वह बिल्कुल स्वाभाविक तथा आवश्यक है। जो शिशु है वह शिशु का वस्त्र धारण करेगा, जो युवा है वह युवकों का बाना पहनेगा। बच्चों का वस्त्र युवक को नहीं पहनाया जा सकता। मानवता को किसी विशिष्ट युग या विशिष्ट देश की संस्कृति से आबद्ध न कीजिये, मानवता को विकसित होने दीजिये, मानवता अमृत का स्त्रोत है, उसे उबलने दीजिये। यह बन, मरूस्थल तथा मैदानों में दौड़ना चाहता है, इसे बढ़ने और फैलने दीजिये। धर्म के विश्व व्यापी तथा जीवित सिद्धान्तों तथा अपनी अभिरूचि एवं विवेक से मानवता का एक नया रूप तथा एक नई आकृति पैदा कीजिये। मनुष्यता का, नैतिकता का एक अनुपम गुलदस्ता बनाइये। वह प्रफुल्लित एवं पल्लवित गुलदस्ता होगा। जो पुष्प सूख गये मुर्झा गये उसको

www.abulhasanalinadwi.org

गले का हार बनाने पर आग्रह न कीजिये।

धर्म आत्मा प्रदान करना है, कल्चर एक ढांचा

धर्म एवं सभ्यता का मार्ग अलग है धर्म आत्मा प्रदान करता है और कल्चर एक ढांचा। धर्म जीवन व्यवस्था तथा जीवन की विधि प्रदान करता है, कुछ प्रतिबन्ध लागू करता है फिर स्वतन्त्र छोड़ देता है। उदाहरण स्वरूप सभ्यता कहती है कि सेठे की लेखनी पवित्र है और धर्म को इससे बहस नहीं कि लोहे के क़लम से लिखा जाये या फाउनटेनपेन से। उसकी मांग केवल यह है कि जो कुछ लिखा जाये वह सत्य एवं सुन्दर हो। धर्म जीवन का उद्देश्य प्रदान करता है और जीवन को आत्मा देती है। वह मानवी जीवन पर कन्ट्रोल क़ायम रखता है किन्तु उससे गति एवं विकास की क्षमता नहीं छीनता, कल्चर को पुनर्जीवित करना इन्सान की मुक्ति नहीं, चाहे यह कार्य हिन्दू करे या मुसलमान या ईसाई। इसे कोई भी कार्यान्वित करे एक बात होगी।

लिपि अथवा अंतरात्मा एवं नैतिकता

आज एक विवादास्पद समस्या यह है कि देश की भाषा क्या होना चाहिये किस लिपि में लिखा जाना चाहिये(1) ऐसा ज्ञात पड़ता है कि मानवता की समस्त समस्याओं का हल इसी पर निर्भर करता है और देश का सुधार इसी पर आधारित है। मित्रों ! पैग़म्बरों के सोचने का यह तरीक़ा नहीं, उनको इससे कोई दिलचस्पी नहीं कि जो कुछ लिखा जाता है कहां से आरम्भ किया जाये और कहां समाप्त किया जाये, दायें से आरम्भ हो कर बायीं ओर को या बायें से दायीं ओर को। उसको तो इससे सम्बन्ध है कि लिखने वाला सच्चा, ईश्वर से डरने वाला, जमानतदार तथा कर्तव्य पारायण हो। फिर वह किसी प्रकार लिखे, वह अच्छा होगा। मैंने बनारस में कहा था कि यदि दस्तावेज़ झूठी है तो क्या

(1) इस बात का ध्यान रहे कि व्याख्यान 1954 में दिया गया। (अनु0)

www.abulhasanalinadwi.org

दायें से आरम्भ करने और उर्दू अथवा फ़ारसी में लिखने से या बायें से आरम्भ करने और हिन्दी अथवा अंग्रेज़ी में लिखने से वह सच्ची हो जायेगी? झूठी तथा जाली दस्तावेज को जिस तरह और जिस ओर से लिखोगे, वह झूठी जाली और पापी रहेगी। सच्ची दस्तावेज़ को जिस तरह और जिस ओर से लिखोगे वह सच्ची रहेगी। पैग़म्बर लिपि के पीछे नहीं पड़ते वह उस हाथ को सुधारना चाहते हैं जो क़लम से काम लेता है बल्कि वह उस हृदय को सुधारना चाहते हैं जो हाथ को आदेश देता है।

पैग़म्बर साधन नहीं उपलब्ध करते, उद्देश्य प्रदान करते हैं

पैग़म्बरों का कार्य यह नहीं कि अपने समय में नये नये अविष्कार करें और उपकरण, यन्त्र तथा मशीनें तैय्यार करें, वह तो इस प्रकार के मनुष्य उत्पन्न करते हैं जो इन यंत्रों तथा साधनों को सही उद्देश्य के लिये उचित ढंग से प्रयोग कर सकें। यूरोप साधन उपलब्ध करता है, पैग़म्बर उद्देश्य प्रदान करते हैं। उन्होंने मशीनें नहीं ढ़ाली मनुष्य ढ़ाले थे। यूरोप ने मशीनें बनाई किन्तु उन्हें प्रयोग कौन करे? हिंसाप्रिय मनुष्य? आज सारी मुसीबत यह है कि साधन पर्याप्त मात्रा में हैं, सामान बहुत है, किन्तु उचित रूप से प्रयोग करने वाला मनुष्य दुर्लभ है।

मानवता को संवेदना एवं सहानुभूति रखने वाले मनुष्यों की आवश्यकता है

मनुष्यता को आज आस्था एवं विश्वास के साथ सत्यता एवं संयम, प्रेम एवं स्नेह और संवेदना एवं सहानुभूति की आवश्यकता है। उसका मदावा तहज़ीब नहीं तहरीर नहीं, उसको आवश्यकता है संवेदनशील मनुष्यों की, दर्दमन्द इन्सानों की, जो दूसरों के लिये घुलें और अपने को मिटा कर दूसरों को बनायें। सभ्यता एवं साक्षरता से मनुष्यता उत्पन्न नहीं होती। यूरोप ने

www.abulhasanalinadwi.org

हमसे सदाचार एवं आध्यात्मिक मान्यतायें छीन लीं, इस मामले में वह स्वयं खाली हाथ था, उसने हमें भी दीवालिया बना दिया। उसने हमारी झोलियों को समाचार पत्रों से, ज्ञान विज्ञान के साथ उद्योगों की नवीन खोजों से अवगत कराया, विद्युत के टिमटिमाते बल्बों से सजा दिया। लेकिन हमें तो आत्मा ज्योति की आवश्यकता थी। वहां पर अंधकार हो गया। आप स्वयं विचार करें, आप से कोई सौदा करना चाहे तो आपको कौन सा युग पसन्द है? मानवता के प्रति सहानुभूति का, संवेदना का जिसमें आदमीयत की चिन्ता थी, मान था या वह युग जिसमें मानवता का आदर तथा सम्मान नहीं किन्तु इसमें छापेखाने हैं, विद्युत के पंखे तथा प्रकाश है। आज आत्मा को शान्ति प्राप्त नहीं परन्तु धन का बाहुल्य है। आज सब कुछ है लेकिन आध्यात्मिक मान्यतायें दुलर्भ हैं, आज सभी उपलब्धियों के उपरान्त भी व्यक्ति उद्देश्य विहीन है जिसके हलक़ में कांटे पड़ रहे हों, प्यास से तड़प रहा हो उसे चुल्लू भर पानी चाहिये, उसके लिये सब कुछ, कुछ नहीं, उसके लिये अशरफ़ियां हों तो क्या? बस संस्कृति में लेशमात्र प्रेम नहीं सहानुभूति, त्याग एवं उत्सर्ग का नाम नहीं, जिसे देखो स्वार्थ का बन्दा, इस संस्कृति को लेकर क्या करें।

हमने हृदय का मार्ग खो दिया

सारी त्रुटि यह हो रही है कि वंचित द्वार से आने का प्रयास नहीं किया जाता। चोर दरवाज़े से प्रवेश करते हैं। हृदय का फाटक बन्द है, और अन्दर जाने का मार्ग वही था। हृदय का मार्ग हम खो चुके हैं। हम स्वार्थ से लिपट कर वहां नहीं पहुंच सकते। दुनिया का बिगाड़ अनुचित घमण्ड तथा इच्छाओं का अधिपत्व तथा उन सब का उदगम हृदय है। इस हृदय में जब प्रभु स्वामी का वास नहीं, इसे उसका आधिपत्य स्वीकार नहीं, यह अपने को उसके सामने उत्तरदायी नहीं समझता, तो फिर उसकी शिकायत क्या, किसी को फिर क्या पड़ी कि वह किसी की

www.abulhasanalinadwi.org

सहायता करे और दूसरे के लियेअपने को संकट में डाले। आज की दुनिया में भाई भाई को व्यापारिक दृष्टि एवं प्रवृत्ति से देखता है, हर एक ने दूसरे को ग्राहक पक्ष का समझ लिया है, चारों ओर लूटखसोट तथा शोषण (Exploitation) का बाज़ार गर्म है। मानव प्रकृति विकृत हो गई है। बाप बेटी से ऊबा है, गुरू विद्यार्थियों से अप्रसन्न हैं।

शिक्षण पद्धति दोष युक्त

आज विश्वविद्यालयों में कोहराम मचा हुआ है कि शिष्य गुरू का आदर नहीं करते और गुरू शिष्यों के साथ स्नेह एवं प्रेम का व्यवहार नहीं करते। तमाम लोग इससे व्याकुल हैं और इसके सुधार के अनेक यत्न किये जाते हैं, लेकिन इसकी जड़ या बुनियाद पर विचार नहीं किया जाता कि शिक्षण प्रणाली जिस का स्वरूप एवं ढ़ांचा प्रकृतिवाद पर है, अन्ततः उसका परिणाम क्या हो सकता है, शिक्षा की कौन सी स्टेज है जहां नैतिकता तथा सदाचार के प्रति प्रयास किया जाता है? यह समस्त बुराईयां तो प्रत्याशित परिणाम हैं। इस शिक्षण प्रणाली को जिसमें तुम्हारा साहित्य, तुम्हारी कला, काम इच्छाओं को जागरूक करता है और मनुष्य को अवसरवादी (Opportunist) बनाता है और फिर तुम्हारा वातारण ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करता है कि अभिलाषाओं एवं इच्छाओं तथा स्वार्थ की जागृति हो सके। वह तुम्हें धनी, साहूकार बनने की प्रेरणा देती है। इस समय आवश्यकता अंतरात्मा तथा मनोवृत्ति बदलने की है, उनके बदले बिना कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।

मनोवृति में परिवर्तन लाने की आवश्यकता

आज हमारे देश में कई सामाजिक सुधार आन्दोलन क्रियान्वित हैं, हम उसका आदर करते हैं, और हमारा बस चले तो हम उनकी सहायता करें, विशेष कर भूटान आन्दोलन, भूमि लेने

www.abulhasanalinadwi.org

से पहले दिलों में बात बिठाने की आवश्यकता है कि कोई अधिक भूमि ही न रख सके। लोग स्वयं भूमि देने को तैयार हो जायें, ऐसी मनोवृत्ति बन जाये कि लोग दीन दुखियों तथा भूमिहीनों को अपनी वस्तुयें देकर प्रसन्नता का अनुभव करें।

हमने इतिहास में यह घटना पढ़ी है कि मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा में पुश्तैनी शत्रुता थी, उनके सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन में मतभेद था, लेकिन जब मक्का मुकर्रमा से लोग मदीना मुनव्वरा आने पर विवश हुए और उन्हें अपने घर की सामग्री तथा धन दौलत छोड़ कर खाली हाथ आना पड़ा तो जिनके पास कुछ न था, वह मदीना मुनव्वरा के खाते पीते लोगों के भाई बना दिये गए। उन्होंने अपने इन नए भाईयों को सीने से लगाया और जिनसे कोई रिश्ता नाता नहीं था उनके सामने अपने घर की आधी सम्पति लाकर रख दी, इधर आने वालों के दिल ऐसे बनाये गये थे और उनका प्रशिक्षण ऐसा किया गया था कि उन्होंने उनको दुआ दी और कृतिज्ञता प्रकट की और कहा कि हमें इसकी आवश्यकता नहीं। हमें आप थोड़ा सा धन उधार के रूप में देदें और बाजार का मार्ग बतला दीजिये, हम मक्का मुकर्रमा में व्यापार करते थे, यहां भी व्यापार करेंगे। पैग़म्बर–ए–इस्लाम ने मदीना मुनव्वरा वालों को त्याग, सहानुभूति तथा आहूति की ओर प्रेरित किया और मक्का मुकर्रमा वालों में आत्म विश्वास तथा आत्म सम्मान की भावना जागृति की। उन्होंने घर की सम्पत्ति आने वालों के क़दमों में डाल दी और आने वालों ने धन दौलत पर दृष्टि न डाली और स्वयं अपने हाथ पाओं तथा अपने परिश्रम से कमाने का संकल्प किया।

हमारा सिर नीचे हो जाता है जब आज परिस्थितियों पर दृष्टि डालते हैं, न एक ओर त्याग एवं उत्सर्ग है, न दूसरी ओर आत्म विश्वास तथा आत्म सम्मान।

हम कहते हैं कि मनोवृत्ति बदलिये, प्रेम की भावना उत्पन्न

www.abulhasanalinadwi.org

कीजिये। ऐसे हृदयों की रचना कीजिये जो दूसरों के दुःख दर्द से पिघल उठे। भूमि विभाजन से पूर्व मनुष्य के अन्दर यह अग्नि प्रज्वालित की जानी थी कि उनसे किसी का दुख दर्द देखा न जाये। कम्युनिज़्म प्रशासन एवं स्टेट से काम लेता है, धर्म हृदय की दशा ऐसी बनाता है कि अशरफ़ियां सांप बिच्छू ज्ञात होने लगें। मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिये खड़े हुए, वह नमाज़ जिस के लिये आप कहते हैं कि मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में है, जिसके लिये आप व्याकुल रहते थे और बिलाल मुअज़्ज़िन से कहते हैं कि अज़ान देकर मेरी शान्ति का प्रबन्ध करो, इसी नमाज़ के लिये खड़े होते हैं, लेकिन सहसा घर वापस जाते हैं, फिर वापस आकर नमाज़ अदा करते हैं। पूछा गया कि आप को कौन सा आवश्यक कार्य याद आया कि नमाज़ छोड़ कर वापस तशरीफ़ ले गये। फ़रमाया कि थोड़ा सा सोना रखा था, मैं इसे ग़रीबों में बांट देने का आदेश दे आया।

कोई भाषा ग़ैर नहीं

मैं मुसलमानों से कहूंगा कि साहस उत्पन्न करो, तुम्हारा किसी भाषा से बैर नहीं, तुम्हें किसी भाषा से घृणा नहीं होनी चाहिये। तुमने फ़ारसी को अपनाया, तुम हिन्दी को क्यों न अपनाओ, ऐसी सुन्दर भाषा जो हमारे देश की भाषा है। परन्तु मैं अपने हिन्दू भाइयों से कहूंगा कि वह ठंडे दिल से सोचें कि मानवता का सुधार न इस भाषा में है न उस भाषा में, न इस कल्चर में न उस कल्चर में, न इस सभ्यता में न उस सभ्यता में। आप मनुष्य में त्याग की भावना, सदाचार की भावना उत्पन्न कीजिये, उसे इन्सान बनाइये, इन्सानों का आदर तथा सम्मान सिखाइये। आज मनुष्य की अन्तरात्मा विकृत हो चुकी है वह अपनी जाति तथा देश ही को देखने का अभ्यस्त बन चुका है। गोरी चमड़ी के लोग कहते हैं कि अटलांटिक महासागर से इस ओर मनुष्य ही नहीं। हर देश के वासी अपने अतिरिक्त किसी को

www.abulhasanalinadwi.org

मनुष्य नहीं समझते, हर ओर जथा बन्दी है और स्वार्थ। रूस के कम्युनिस्टों के सामने एक वर्ग का हित है। अमेरिका के पूंजी पतियों के सामने दूसरे वर्ग का हित है। एक को पूंजीपति दिखाई नहीं देता और एक को मज़दूर तथा किसान। एक के निकट संसार में मज़दूर ही मज़दूर हैं, दूसरे के निकट किसान ही किसान, तीसरे की दृष्टि में पूंजीपति ही पूंजीपति। वह जातिवाद तथा संकीर्ण दृष्टिकोण अति विषैली वस्तु है।

ईश्वर भक्ति के आन्दोलन की आवश्यकता

आज ईश्वर भक्ति तथा मानव प्रेम के आन्दोलन की महान आवश्यकता है, आज इसके लिये एक विशाल अभियान (Campaign) की आश्यकता है, एक भूचाल की आवश्यकता है, ईश्वर भक्ति की आंधी की आवश्यकता है जो बड़े–बड़े स्वार्थमयी पहाड़ों को हिलादे, इच्छाओं के टीलों को उड़ा दे। नगर–नगर, गांव–गांव यह कहता है कि पशुता का जीवन बाकी रहने के योग्य नहीं, प्रकृतिवाद का वृक्ष खोखला हो चुका है। अहंवाद का वृक्ष जो संसार पर छाया हुआ है, वह जड़ें छोड़ चुका है। इन्सानों ! अपना मूल्य आंको पहचानो, जीवन तथ्यों से अपने भाग्य को सम्बद्ध करो, खुदा की अपार शक्ति से जुड़ जाओ।

विद्या एवं नैतिकता के सहयोग की आवश्यकता

हमको विरक्त जीवन की आवश्यकता नहीं जो संसार से विरक्त रहने की शिक्षा दे और अपना स्थान पहाड़ों तथा खोहों में तलाश करे। हम उस आध्यात्मिकता का आवाहन देते हैं जो जीवन की संगीनी है बल्कि जीवन का मार्ग दर्शन करती है मैं प्रतिक्रियावदी नहीं मैं प्रतिक्रिया पर विश्वास नहीं रखता मनुष्यता के लिये यह आवश्यक है और इन्सानियत का तक़ाज़ा एवं उसकी मांग है कि सदाचार, ज्ञान एवं विज्ञान और ईश्वर भक्ति मिल जुल कर चलें आज उसका सन्तुलन बिगड़ गया है, उनमें सहयोग एवं

www.abulhasanalinadwi.org

विश्वास नहीं रहा। विज्ञान एक ओर जा रहा है तो सदाचार दूसरी ओर, दोनो उग्रवादी (Extremist) हैं।

भौतिकवाद एवं अध्यात्मवाद

यही दशा जड़वाद एवं आध्यात्मवाद की है। एक दुनिया को निगल लेना चाहता है, उसे पूजता है, एक उससे घृणा करता है और उससे अप्रसन्न है। हम यह कहते हैं कि उसे ईश्वर की देन समझकर, उसकी कृपा समझकर उसके नियमों के अनुसार उसका उपभोग करो, उसे अपना दास समझो, स्वयं उसके दास न बन जाओ। न इस जीवन की उपासना करो न उससे घृणा करो। ईश्वर के समक्ष अपने को उत्तरदायी समझो और उसकी अदालत के सामने उपस्थित होनें का और प्रतिफल एवं प्रतिदण्ड का विश्वास करो, उसके भेजे हुए निःस्वार्थ एवं निर्लिप्त पैग़म्बरों में आस्था रखो और उन्हीं से इस जीवन के सिद्धान्त तथा नियम ग्रहण करो। अपने को खुदा का बनाओ, वह दुनिया तुम्हारी बन जायेगी।

समाप्त

सभ्यता और संस्कृति पर इस्लाम की छाप और उसकी देन

लेखक

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी

"इस्लाम और मानव सभ्यता व संस्कृति" एक सच्चा और सजीव विषय है जिसका सम्बन्ध हज़रत मोहम्मद स0 के अभ्युदय व इस्लामी सन्देश व शिक्षा ही से नहीं, जीवन की वास्तविकताओं, मानवता के वर्तमान व भविष्य तथा सभ्यता व संस्कृति की संरचना में इस्लामी उम्मत की ऐतिहासिक भूमिका से भी है। यह महत्वपूर्ण प्रकरण वास्तव में एक व्यक्ति के प्रयास के बजाय किसी सामूहिक प्रयास की अपेक्षा करता है। क्योंकि यह विषय अपनी व्यापकता में विश्वव्यापी है। यह व्यापक भी है और ठोस भी। इसका काल पहली इस्लामी शताब्दी से लेकर वर्तमान शताब्दी तक, और इसका विस्तार दुनिया के एक किनारे से दूसरे किनारे तक है। अपने भावार्थ में यह विश्वास व आस्था से आचरण व व्यवहार तक तथा व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन से राजनीति व कानून और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों तक तथा चिन्तन, ज्ञानमयी व नैतिक उत्थान से लेकर कला कौशल तथा ललितकलाओं तक छाया है।

प्रयास किया गया है कि इस फैले हुये शीर्षक का दस भागों में वर्णन किया जाय जिससे दुनिया को इस्लाम के महान और प्रदर्शित आभार व प्रभाव का कुछ अनुभव हो सके।

मजलिस तहकीक़ात व नशरियाते इस्लाम
पोस्ट बाक्स नं0 119, नदवा, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org